Akhari din ..

आखरी दिन

Vishal A Surgade

इस कहानी के सारे किरदार , जगह और नाम सब पूरी तरह मेरी सोच से बनाये गयें है जिसका अतीत से और वास्तविकता से कोई भी रिश्ता नही है ! और मेरी आप से विनती है के आप इस कहानी को सिर्फ काल्पनिक नजरियें से पढ़े !

...

इस कहानी में एक अक्ष नाम का किरदार है , जिसको किसीके खून के इल्जाम में फ़ासी की सजा होती है ! और एक साक्षी नाम का किरदार है जो अक्ष के बचपन के दोस्त होने का दावा करती है वह ये जानना चाहती है के अक्ष के साथ आखिर क्या हुआ था ! इस कहानी में एक और किरदार महत्वपूर्ण भूमिका में है जिसका नाम है देवा ! देवा का किससे क्या रिश्ता है और वह किस तरह महत्वपूर्ण भूमिका में है ये जानने के लियें आपको कहानी पढ़नि होगी!

...

हम जो कुछ भी करते है अच्छा या बुरा उसके पीछे किसी न किसीका हाथ होता है ! तो अगर मैं कुछ लिख पा रहा हु , या फिर सोच रहा हु उसके पीछे बहूत से लोगों का हाथ है ! मैं उनका शुक्रियादा तो नही करूँगा ,क्युकी कहते है अगर हमने शुक्रियादा कर लिया तो हम उन्हें भूल जाते है ! मैं उन्हें हमेशा याद रखूँगा , मेरी हर कमियाबी की शुरवात में उन्ही का जिक्र होगा ! मेरे दोस्तों में से किसी एक को लगता है के मेरी हिंदी बहूत ख़राब है ,उसी हिंदी के साथ ये कहानी उसके लियें भी !

ये मेरी पहली कहानी है , तो शायद ये उतनी अच्छी न हो जितनी अच्छी कहानियाँ आप पढ़ चुके हो ! लेकिन मैंने कोशिश की है कहानी को अच्छी तरह से लिखने की उम्मीद है आप लोगों को पसंद आएगी ! और इस कहानी को पढने के बाद जरूर बतायेंगा के आप को कैसी लगी ! और कोई सुजाव हो तो वह भी !

ईमेल : vishalsurgade4@gmail.com

Faceboook : www.facebook.com/vishalsurgade

Instagram : www.instagram.com/vishalsurgade

Index

अध्याय १

"यार्..र...थक चूका हु , ये हवालदार की नोकरी कर के , सुबह टाइम पर जेल आओं इन सड़े कैदियों के बिच दिन गुजरों , और रात को घर जाओ तो बीवी और बच्चें दोनों सों जातें है ! साला सुकून ही नहीं है जिंदगी में....!"

"अरे.....जतिन ज्यादा अपने दुखड़े मत सुना !" "वों देख तेरी खुबसूरत परी , इसे देख कर तुझें सुकून मिलता है न ... , देख ले जी भर कर ...!"

"हा...यार.. तेरी बात तो सही है , अगर सुबह सुबह कोईं ख़ूबसूरती दिख जायें , तो साला पूरा दिन उसका चेहरा आखोंमे होता है !" "लेकिन मेरी ये ख़ुशी उपरवाले से ज्यादा देर देखि नहीं गयीं !" "सुना है ये जिससें मिलने आती है , उसको आज फ़ासी होने वाली है ...!"

"ह्म्म्म.हम्म.. छोड़ यार....!" "लेकीन एक बात है , वह इंसान जिसने २ सालों में न किसीसे बात की और नही अपनी चार दीवारों से बाहर आया है , पर ये लड़की हर रोज उससे मिलने आती है , एक दिन भी ना छुटा ....हर रोज...!" जेल के प्रवेशद्वार पर खड़े दों हवालदार एक लड़की को आतें देख आपस मे बातें कर रहे थे ..!

...

आज आखरी दिन है ..! और वक़्त भी काफी तेजीसे गुजर रहा है ..., और इस गुजरते वक़्त का सबसे खुबसूरत लम्हा ... 'रेहाना' !

आँखें बंद थीं और बंद आँखों से गुजरती उसकी पडछाई , कानों में गूंजती उसकी आवाज़ , तेजीसे बहतीं ये हवा, जैसे रेहाना उसे पुकार रही थीं ..! " बस रेहाना कुछ ही पल का फ़ासला है , हमारी दूरियां जल्द मिट जाएगीं !" " में आ रहा तुम्हारें पास ..!" अक्ष मन ही मन गुनगुना रहा था ! लेकिन उस आखरी दिन के आखरी पल के लियें थोड़ा और वक़्त बाकि था ..!

अक्ष अपनी ही सोच में था की तभी एक अफसर किसी लड़की के साथ उसकी ओर आने लगे ! अक्ष जंजीरों से घिरा हुआ , कालि दीवारों के एक कोने में बैठा था ..! उस अफसर ने वहा पास में ही खड़े हवालदार को दरवाजा खोलने को कहा ! " कैदी नंबर २०९

‘अक्ष करसदार’ ... लो आ गयीं ये लड़की हररोज की तरह तुमसें मिलने !” अफसर ने कहा ! अक्ष तब भी ख़यालों में था !

“अक्ष ..हर बार की तरह इस बार भी में यहीं जानने आयीं हु .. के लगभग दों सालों पहले क्या हुआ तुम्हारें साथ , क्या वजह थी जो तुम अब इस हालातों में हो !” “ आखिर बता दो अक्ष क्या हुआ था ....!” “हर रोज सिर्फ एक बात सताती है की तुम मुजसें मिलने वालें थे लेकिन तुम यहाँ इस हालातों में ?? कैसे??”

अक्ष ने जैसे ही साक्षी की आवाज सुनी हलके से अपनी आँखें खोलीं , और साक्षी की ओर अपनीं गर्दन घुमाई ,और साक्षी को कुछ पल के लियें सिर्फ देखता रहा ! अक्ष के चेहरें पर एक तरह की हसीं थी जो आसानी से किसीको भी घबरा सकती थी ! अक्ष की वह हसी देख कर साक्षी कुछ पल के लियें घबरा गयीं !

“ये .. लड़की चलो निकलो यहाँ से .... इसकी फ़ासी का वक़्त हो गया ...!” अफसर !

उस अफ

सर ने अक्ष को अपने हाथों से उठाया और उसकी बेड़ियों की एक बाजु पकड़ कर उसे ले जाने लगा ! तभी अक्ष ने अपनी वही क्रूरतापूर्वक हसीं के साथ साक्षी को देखा और बोल उठा , “रेहाना .. !”

...

“र..रेहाना ... ? कोण है ये रेहाना , आखिर क्या रिश्ताः है उसका और अक्ष का ... दों सालों से में अक्ष से एक ही सवाल करती रहीं , पर उसने कुछ नही बताया !” “ बताया .. तो सिर्फ एक ही शब्द ‘रेहाना ....’ ?” इसी बात को लेकर साक्षी अपने कमरे में बैचेनी से बैठी थी और किसी तरह एक फैसले पर जाना चाहती थी ... पर उसे कोई भी रास्ता नजर नही आ रहा था ..! तभी नीचे वाले कमरे से आवाज आयीं , “साक्षी ...साक्षी...... जल्दी नीचें आओं खाना खा लों...!” साक्षी ने जैसे ही अपनी माँ की आवाज सुनी हडबडाते हुयें नीचें चली गयीं !

साक्षी और उसकी माँ जब दोनों साथ में खाना खा रहे थे तब भी साक्षी अपनी उसी सोच में डूबी थी !

“क्या बात है साक्षी बेटा ..? तुम काफ़ी परेशानी में दिख रही हो ....!” साक्षी की माँ !

“ नही माँ ..... नही ...कुछ नही... बस ..ऐसें ही ...!” साक्षी !

“ ठीक है ...! कल ऑफिस जातें वक़्त ....!” साक्षी अपनी माँ की बात काट कर बोलने लगी , “माँ तुम्हें वो अक्ष याद है ...? ? जो बचपन में हमारे घर की सामने रहता था ..!”

“हा...हा..याद है ..पर क्या हुआ ...? क्या हुआ उसें ?” साक्षी की माँ !

“माँ उसको किसीके के खून के इल्जाम में फ़ासी की सजा दी गयीं .... , लगभग दों सालों पहले हम मिलने वाले थे , पर अगले दिन खबर मिलीं की उसे गिरफ्तार कर लिया गया है ...!” साक्षी !

“ क्या??? ये कैसे हो सकता है ..? मुझें तो यकीनं ही नही हो रहा , वो किसीका खून कर सकता है ! काफी अच्छा लड़का था ...!” साक्षी की माँ उसकी बातों पर यकींन न दर्शाते हुयें बोलने लगीं !

“हा...माँ..ये सच है ... , पर माँ में जानना चाहती हु के उसके साथ क्या हुआ था ... वो मुजसें मिलने की जगह जेल कैसे गया ...!! साक्षी !

“देखो साक्षी , अगर तुम एक कड़ी सुलझाने जाओगी तो आगे दस कडियाँ जुड़ जायेंगी , दस राज सामने आयेगें ख़तरा भी बढ़ सकता है , तो जो कुछ भी करोगी सोच समज के करना , और मेरे ख़याल से छोड़ दो ....ये बात !” साक्षी की माँ !

साक्षी अपनी माँ की बात अनसुनी कर , अपना खाना निपट कर अपने कमरे में चली गयीं !

लेकिन वह तब भी उसी सोच में थी ! “ कहा से शुरू करू ...कहा ..से .... रेहाना ...यस ..रेहाना इस लड़की से मिलना होगा ... शायद् कुछ पता चल जायें !” उसी सोच में डूबी साक्षी की कब आँख बंद कर सो गयीं उसे भी बता नही चला !

...

सूरज की किरने खिड़की की काचों को छेद कर ,साक्षी के सर से आँखों की ओर बढ़ने लगी, जैसे की वह किरने साक्षी से कुछ कहना चाहती थी , शायद यही की उसे किसी उलझन को सुलझाना है ... कोई था जो उसके दिल के काफ़ी क़रीब था .... उसे जानना है की उसके साथ क्या हुआ था ...!

जैसे ही सूरज की किरने साक्षी की आखों पर आयी , अचानक् से उसनें अपनी आँखें खोली ! और उसकी नजर घड़ी पर गयीं , तो सुबह के ९ बज चुके थे ! उसने झट से खुदको तयार किया और निकल पड़ीं ! जैसे ही वह घर के दरवाजें के बाहर कदम रखती उसे कुछ याद आया ,और वह भागते हुए अपने कमरे में गयीं , अपनें बेड के बाजूवाले ड्रावर को खोला और उसमे से एक तस्वीर निकाल कर अपने पर्स में रख दी , फिरसे अपने रस्ते पर निकल पड़ी ! अपने घर से साक्षी सीधे उसी जेल गयीं जहा अक्ष को रखा गया था !

“ये लड़की तू आज फिर आ गयीं ..? आज क्यों आयीं है ? तेरे दीवाने को तो फ़ासी हो गयीं न कल ही ..!” एक अफसर अपनि खुर्ची पर बैठे बैठे साक्षी को आता देख बोलने लगा !

“ एक लड़की से कैसे बात करते है उसकी जरा सी भी तमीज़ नही है आप मे..?” साक्षी !

“पळवणकर ...? क्या चल रहा है यहाँ ?? और कोण है ये लड़की ???” एक इंस्पेक्टर , कंधे पर तिन स्टार ,खाकी वर्दी ,सर पर एक बड़े ऑफिसर होने का सपूत देने वाली टोपी ,छाती पर नाम दर्शाने वाली प्लेट जिसपर लिखा था ‘प्रमोद उपाद्धे’ , अपनी दमदार आवाज के साथ उस खुर्ची पर बैठे अफसर को पूछने लगे...!

जैसे ही पळवणकर ने उस इंस्पेक्टर की आवाज सुनी झट से अपनी खुर्ची से उठ कर इंस्पेक्टर को सलाम किया और कहने लगा...! “ सर ये लड़की हर रोज यहाँ आती थी सर ... उस कैदी नं २०९ से मिलने जिसको कल फ़ासी की सजा दी गयीं ..!” “इस लिए सर में बस उससे पूछ रहा था के आज क्यों आयीं है ...??”

पळवणकर कि बात आधे मे टोक कर साक्षी बोलणे लगी , “सर मेरा नाम साक्षी है , और अक्ष मेरा बचपन का दोस्त था सर ... में बस इतना जानने आयीं थी के उसे किसके खून के इलज़ाम में फ़ासी दी गयीं ..? आखिर उसने किसका खून किया था ..??”

साक्षी की वो बैचेनी देख कर उपाद्धे ने उसे बैठने के लिए कहा और पळवणकर को कहने लगे , “पळवणकर जरा वो २००७ मार्च की फाइल लेके आओं ...!”

“ हा....तो... ‘अक्ष करसदार ‘ जो के आप कह रही है के वो आपके बचपन के दोस्त है !” उपाद्धे !

“ जी ...जी.. हा... सर ...!” साक्षी !

जबतक उपाद्धे साक्षी से बात कर रहे थे तबतक पळवणकर ने एक फाइल ले कर आयें और उन्होंने वह फाइल उपाद्धे के टेबल पर रख दी ... , और वहा से चले गयें !

“ उस कैदी ने , आइ मीन ‘ अक्ष ‘ ने मार्च २००७ में एक लड़की का खून किया था जिसका नाम था ‘रेहाना मक़सूद’ !” उपाद्धे !

“व्हाट ...! उ..उ.. उसने रेहाना का खून किया है ??? आखिर क्यों ?? मतलब ..कैसे ? ये कैसे हो सकता है ?? साक्षी अचंभित हो कर बोलने लगी “ ये कैसे हो सकता है .?? मतलब मुझें लगा के ... रेहाना ... शायद इस कड़ी को सुलझाएगी , पर अक्ष ने तो उसका ही खून किया है ......!” साक्षी को इंस्पेक्टर की बातोंपर यकीनं ही नही हो रहा था ! साक्षी की बैचनी समजकर उपाद्धे ने वह फाइल उसे दिखाईं और एक तस्वीर पर उंगली रख कर कहने लगे ! “ ये ..ये .है ... ‘रेहाना मकसूद ‘ जिसके खून के इलज़ाम में अक्ष को फ़ासी दी गयीं ..!”

साक्षी गहरे सोच में चली गयीं , कुछ पल के लीये ! और अचनक से जैसे उसे कुछ याद आया उसने अपनी पर्स से मोबाइल निकाला और रेहाना की तस्वीर से अपने मोबाइल पर उसकी फोटो खीच ली !

“सर क्या मुझें रेहाना के घर का पता मिल सकता हैं ?” साक्षी !

“ या ...शुअर ...व्हाई नॉट !” इतना कह कर उपाद्धे ने एक कागज़ पर रेहाना का पता लिख कर साक्षी को दिया !

उपाद्धे के टेबल से थोड़ी ही दुरीं पर एक हवालदार खड़ा था वह साक्षी और उपाद्धे की सारी बातें सुन रहा था ...! और जैसे ही साक्षी वो कागज़ लेकर वहा से जाने लगी , हवालदार ने अपनी जेब से मोबाइल निकला और किसीको फ़ोन पर कहने लगा , “भाई .... वह लड़की आज भी आयीं थी ....!”

अध्याय २

“ बता शिवा अब इसका क्या करे ...? , दों महीनें से हम इसको इस छोटेसे चूहें के बील के बदलें में कुछ पैसे दे रहे है , जिसकी वजह से ये अपने पोतों को अच्छाखासा पढाएंगे ,खुद भी चारधाम की यात्रा पर जायेंगें ,और आगर ये बुड्डाव् मर भी जायेंगा तो इसके बेटे को इसे जलाने के लियें खुद के जेब से पैसे भी खर्च नही करने पड़ेंगे !” “ अब इतना अच्छा ऑफर कोण देता है यार.रर.. , लेकिन बुड्डाव् राज़ी ही नही हो रहा !” “ये बस एक ही पुंगी बजा रहा है “पुरखों का घर है ,यादें जुड़ीं है , जबतक में जिंदा हु ये घर तेरा नही हो सकता ...!”

“देख उम्र के नाजायज़ बुड्डे , उंगली पर गिनती कर सकू उतनी ही तो तेरी जिंदगी बची है , जी ले न यार् हसी ख़ुशी क्यू इस शिवा के हाथों एक और पाप करवाना चाहता है ...?” “ तेरे इस घर की खूबसूरती ने मुझें घायल कर दिया हैं , और हर चीज़ जो मुझें घायल कर दे मुझे हर हालात में चाहियें ! सौदा करकें या फिर क़त्ल करकें भी ...!” एक इंसान जिसके बाजूमें ही खड़े अपने सहयोगी की ओर उंगली करते हुयें , एक घर में अपने सामने बैठे किसी इंसान को अपना ख्वाफ़ दिखाकर डरा रहा था ! जिसके बाएँ हाथ पर एक तरह का निशान था , जैसे किसीने अपने हाथों से अपनी सारी कला उस निशान को बनाने मे लगा दी हो , वह निशान एक नाम था ‘ देवा ‘ !

“ में तुझें फिर से कह रहा हु , के तू मेरी जान भी लेगा तो भी ये घर तेरा कभी नही हो सकता ..!” “ तू जितना चाहे मुझें डराने की कोशिश कर ,तुझें कुछ हासिल नही होने वाला..!” देवा के सामने बैठा एक आदमी जिसकी उम्र लगभग ६०-६५ के क़रीब हो , अपने निडर आत्मविश्वास के साथ देवा को जवाब दे रहा था !

उसी घर के दरवाजें पर एक आदमी खड़ा था ! जो की देवा का सहयोगी था ! देवा उसे इशारों में कुछ कहने लगा, और उस आदमी ने शायद देवा के इशारे को समज भी लिया था ! दरवाजें पर खड़े उस इंसान ने घर के ठीक बाहर आँगन में पानी के बहती एक नली को उठाया और देवा को सोफ़ कर फिर से अपनी जगह जाकर खड़ा हो गया !

"शिवा.... अगर हम गुब्बारे में पानी भरते गयें ,भरते गयें तो क्या होगा ?" देवा अपने बाजूमें खड़े सहयोगी से कहने लगा ! देवा की हर बात में शिवा का ज़िक्र होता था , जो की इस बात की गवाही दे रही थी के शिवा उसका अच्छा और खास सहयोगी हो !

"भाई ....वह गुब्बारा फट जायेंगा ..!" शिवा !

"और अगर किसी इंसान में भरते गयें तो ?" देवा !

"भाई वह ट्राय करकें देखना पड़ेगा ....!" शिवा ! शिवा के इस बात को कहतें ही देवा और उस घर मौजूद देवा के सारे सहयोगी हसने लगे !

देवा ने अपने हाथ की वह नली शिवा को सोफ़ कर फिर से इशारों में उससे कुछ कहा और उस घर से बाहर निकल कर अपनी गाड़ी में जाकर बैठ गया !

शिवा ने वह नली अपने हाथ में ली और दरवाजे पर खड़े उस सहयोगी को जिस नल से वह नली जुड़ी थी, उसे चालू करने को कहा ,और उस नली को उस बूढ़े आदमी के मुह में डाल दिया ! और अपने दोनों हाथों से उसके मुह को इस तरह पकड़ कर रखा के पानी बाहर न आ सके और वह उसमे कामियाब भी हो गया ! वह बूढा आदमी अपनी सारी शक्ति से उस नली को अपने मुह से निकाल ने कोशिश करने लगा पर उस की सारी कोशिशें नाकामियाब रही और कुछ ही मिनटों में उस बूढ़े आदमी की हलचल बंद हो गयीं ! जिससे ये साबित हो गया के उसमे उसकी जान ही न रही !

उतने में वहा एक इंसान जिसकी उम्र ४०-४५ के क़रीब हो ... , कुछ दो तिनं बक्से के साथ घर में आया ! उसने घर में दस बारह लोग देखे और अपने पिताजी की सामने पड़ी लाश देखि ! अपने हाथों के बक्सें को फेक कर , तेजीसे शिवा की ओर आया ओर शिवा को अपने हाथों से दूर फेकते हुयें अपने पिताजी के पास गया ! तभी एक आदमी उस इंसान के पिच्छे से आया और उसके पीठ में अपनी हाथों का खंज़र डाल दिया ! और उस खंजर को उस इंसान के पीठ के अंदर ही अंदर चारो ओर घुमाने लगा ! जैसे ही उस इंसान ने एक जोरसे आवाज निकली खंजर खुपसने वाले इंसान ने अपना खंजर फिरसे बाहर निकाल लिया ! एक ही घर में दों लाशे पड़ी थी ! एक उस बूढ़े आदमी की और उसके बेटे की !

जब वह दोनों आदमी पूरी तरह मर गए ,शिवा और उस घर में मौजूद उसके साथियों ने दुसरें कमरे में जाकर एक लॉकर को खोला और उसमें से कुछ कागज़ात निकाल कर सब देवा के साथ दरवाजे के बाहर खड़ी गाड़ी में जाकर बैठ गयें !

...

“भाई कागज़ात मिल गयें ...!” शिवा !

“चलो.... आखिर बुड्डे की जान लेकर सही घर तो अपना हो गया ....!” देवा !

“हा.....भाई......!” शिवा !

“ड्राईवर गाड़ी निकाल .....!” देवा !

“भाई ..... वो हवालदार का फ़ोन आया था ...! वह लड़की रेहाना का पता लेके गयीं है ....!” शिवा !

“हा...श..श..श.श.. चलो ..मतलब सब प्लान के मुताबिक हो रहा है ! बस ध्यान रहे के आगें के प्लान में कुछ गड़बड़ी न हो ..!” “और हा आगे के प्लान के लियें माधव को भेज दे ... !” देवा !

“नही भाई ....कोई गड़बड़ी नही होगी ...!” “भाई .... वह माधव की जगह में जाऊ ??” शिवा !

“नही शिवा..... तू मेरे साथ ही रह !” “तुझें पता है मुझें किसीका खून वगरा करना बिलकुल पसंद नही है ,इसिलिये तो मेरे सारे खून खराबे वाले काम तू ही करता है !” “और वैसे भी तू बर्फ की तरह है , तुझें किसी बर्तन मे डालों तो तुझें उसमें सेट होने में टाइम लगता है !” “लेकिन माधव पानी तरह है , जिसमे डालों उसमे सेट हो जाता है !” देवा !

“वैसें माधव है कहा ?” देवा !

“भाई वह गुरूजी के घर गया है ,पैसे लेने ..!” शिवा !

देवा ने सिर्फ “हम्म !” कह कर गर्दन हिलाई और अपने सिट पर आराम से बैठ कर आँख बंद कर ली !

थोड़ी देर के लियें गाड़ी में चूप्पी रही , बस चलते गाड़ी की आवाज सुनाईं दे रही थी !

“भाई ....में जरा .... मिल के आऊ ? वह कब से फ़ोन कर रहीं है !” शिवा !

देवा हलकी सी हसीं के साथ कहने लगा ! “शिवा .... शिवा ... तू और तेरी वाली एक दिन मेरा धंदा बंद करके रहेंगें ....!”

“नही भाई .... बिलकुल नही वो बस २ सालों से साथ है तो थोड़ा वक़्त देना पड़ता है !” शिवा !

“२ साल ...!” देवा फिर से चेहरे पर हसीं लाकर कहने लगा ! “देख शिवा ...... टूथब्रश को और लड़की को हर तिन महीने में बदलना चाहियें , वरना दोनों सेहत की लियें हानिकारक हो जाते है !” “पंधरा मिनटों की ख़ुशी के लियें तूने एक ही लड़की के पीछे दों साल बर्बाद कर दियें ....!”

शिवा, देवा की ये बात सुन कर नाराज़ हो गया “भाई .... में सच्चा प्यार करता हु उससे ...!” शिवा !

शिवा की ये बात सुन कर देवा और उस गाड़ी में बैठे उसके सारे सहयोगी ज़ोरों से हसनें लगे ! शिवा अपनी गर्दन निचे झुकायें खामोश बैठा रहा ! शिवा की गुस्से भरी ख़ामोशी उसके चेहरे पर साफ़ नजर आ रही थी ! शिवा का गुस्सा होना जायज़ था , क्युकी अगर हम किसीसे सच्चा प्यार करते है ,तो उसके बारे में कुछ भी बुरा सुनने की शक्ति हम्हारे अंदर बिलकुल कचरे के डिब्बे मे पड़े कचरे की तरह होती है !

शिवा के चेहरे पर दिख रही नाराजगी देख कर देवा उसे कहने लगा “जा...भाई .....जा...... वरना ये तेरी वाली मुझें ही कोसेगी ! जा....!”

...

एक अलिशान घर के पीछें एक खूबसूरत से बगीचे में दस पंधरा लोग , सफ़ेद कलर की शर्ट और काले कलर की पैंट को पहने हुयें बगीचे के चारो ओर ऐसे फ़ैले थे जैसे सतरंज के खेल के मोहरे हो ! लेकिन एक इंसान किसीकी कलाकृति से निखारे हुयें एक बड़े से झूले पर बैठा था ! और दों तिन आदमी उसके सामने खुर्ची पर बैठ कर टेबल पर रखे नोटों के बेग में से एक एक बंडल निकाल कर उसे गिन रहे थे ! तभी एक इंसान आँखों पर काला चश्मा, गले मे एक बड़ी सी चैन , अपने एक हाथ को जेब में रख कर ,अपने दुसरे हाथ को हिलाते हुयें अपनी दमदार मनोवृत्ति के साथ झूले पर बैठे इंसान की ओर आने लगा !

“नमस्कार !!! गुरूजी , नमस्कार ....! आप तो पैसे में खेल रहे हो .. और वहा देवा भाई आपकी ओर से संपत्ति न आने पर आपत्ति खडी कर रहे है ! और बहोत दिनों से कबाब नही खाया हमनें और आपके लोग तो नोट खा रहे है.... ! चलो फटाक से दों बैग पैक करो

और जाने दों मुझें बहोत काम है !" वही इंसान अपने आँखों पर से चश्मे की उतार ते हुयें ,उस झूले पर बैठे इंसान से कहने लगा !

"साले तू है कोण ?? ह... ?और तुझें क्यों पैसे दू में ???" झूले पर बैठा इंसान उस इंसान को जवाब में कहने लगा !

"अरे माधव हु ... गुरूजी ...माधव ... ! गुरूजी ... तोड़ने वाला ! कभी नाम नही सुना क्या ? हा ठीक है .... मानता हु के अभी अभी इस धंदे में आया हु ... तो नाम कैसे सुनोगे ! देवा .... ! देवा भाई ने भेजा है !"

तभी वहा झूले के सामने खुर्ची पर बैठे इंसानों में से एक इंसान उठ कर बोलने लगा !

"अबे ओ ...देड इंच के बंदर, कोण है कोण तू ? ह..? देवा भाई का नाम लेकर गुरूजी से पैसे हड़पना चाहता है ?"

"कमाल करतें हो यार्.रर..! बार बार एक ही सवाल पूछ रहे हो ! अब आदमी कितनी बार इंट्रोडकसंन देगा ! तोड़ने वाला माधव ..!! ठीक है छोड़ यार ..र , अब बताते नही, कर के दिखाता हु !" माधव उस खुर्ची पर से उठे इंसान पर अपना रुबाब झाड़ते हुयें बोलने लगा ! तभी उसके मोबाइल की रिंग बजी , उसने जेब में से मोबाइल निकाला और अपने अंघूटे से मोबाइल की स्क्रीन पर दिख रहे चिन्ह को अपनी दाईं ओर सरका कर मोबाइल कान पर रख कर बात करने लगा !

"क्या !! यार ...रर... शिवा तुझे बड़ी बुरी आदत है ! एन एक्शन के टाइम पर फ़ोन करता है ! बोल अब क्या हुआ !" माधव की बात ख़त्म होते ही सामने से आवाज आयीं ! "माधव तुझें एक जरूरी काम के लिए जाना है ! जल्दी से गुरूजी के यहाँ का काम निपट और इधर आ जा !"

"हा.. हा....भाई . आता हु ... ! शिवा सुन सुन ... ये गुरूजी को बता के में कोण हु .. !" इतना कह कर माधव ने अपने हाथ का मोबाइल झूले पर बैठे इंसान के हाथ में दे दिया ! थोड़ी देर के लिए मोबाइल पर सामने से आने वाली आवाज को सिर्फ सुन कर झूले पर बैठे इंसान ने मोबाइल पर दिया गया एक लाल रंग के चिन्ह को दबाकर वो मोबाइल माधव को सोफ़ते हुए बोलने लगा ! " दे दो उसे दों बैग ...!

...

अध्याय ३

साक्षी जेल से निकल कर उपाद्धे के द्वारा दिये गयें पते पर गयीं ! जो पता उप्पद्दे ने दिया था , ठीक उसी पते पर एक छोटा सा घर था ! घर के आँगन में सारी तरफ , आँगन में लगे हुए फूलों के पेड़ से गिरे हुयें सूखे पते और कुछ मुरजायें हुयें फूल बिखरे थे ! खिड़की की काचों पर काफी सारी धुल जम गयीं थी ! घर की दीवारों पर बच्चों की शैतानियों से गेंद से बने , नाली के पानी से मलिन धब्बे लगे थे ! कुछ घर में जाते वक़्त पहले बाहरी हिस्से मे बने लोहें के द्वार मे से गुजरना पड़ता है ,वैसा ही एक द्वार उस घर पर भी था, जिसे देख कर लग रहा था के मकड़ियों ने अपने जाल से उसे अपने कब्जेमें कर लिया हो !

इस सारे वातावरण को देखतें हुयें साक्षी ने इतना अनुमान तो लगा लिया था के ये घर तकरीबन दों तिन सालों से सुनसान पड़ा हो ! उसे पता चल गया था के यहाँ कुछ हासिल नही होने वाला ! लेकिन वहा उसी घर के ठीक बाजूमें एक और घर था ! जिसकी हालत उस सुनसान पड़े घर से कही गुना अच्छी थी ! साक्षी उस घर की ओर बढ़ने लगी तभी एक लड़की उस घर से बाहर निकलीं ! साक्षी ने उस लड़की को देखा और दौड़ते हुयें उसके पास गयीं !

“एक्सक्यूज मी.... क्या आप मुझें बता सकती है, के यहाँ ये घर इतना सुनसान क्यों पड़ा है ?” साक्षी

साक्षी को जवाब मे वह लड़की उसे कहने लगी ! “अगर घर में कोई रहता ही नही, तो घर सुनसान ही रहेगा न !”

“नही .. मैं ये पूछ रही थी के , यहाँ वह रेहाना ....?? यह रेहाना का ही घर है न ?” साक्षी !

वह लड़की रेहाना का नाम सुनते ही अचरज से पूछने लगीं “तुम ..तुम रेहाना को कैसे जानती हो ??”

“मैं ... मैं बताती हु न तुम्हें सब ! पहले मुझें ये बताओ के तुम रेहाना को जानती हो ?” साक्षी !

वह लड़की साक्षी को जवाब देते हुयें कहने लगी “जानतीं हु मतलब ?? वह दोस्त थी मेरी बचपन से साथ थे हम ! ये जो सुनसान घर पड़ा है न ये उसीका घर है ! यही रहती थी वह

, हम साथ पढ़े है साथ साथ खेलें है ! लेकिन दुःख की बात है, के वह अब हम्हारे साथ नही है !

साक्षी को इस उलझीं हुईं कहानी की एक कड़ी मिल गयीं थी ! उसे लगा के अब कुछ न कुछ तो हासिल हो ही जायेगां !

“ क्या हम कही बैठ कर बात कर सकते है !” साक्षी उस लड़की से कहने लगी !

“ हा..हा.. बिलकुल क्यों नही !” इतना कह कर वह लड़की सक्षी को उसके घर मे ले गयीं ! और उसे बैठेनें को कहा और दुसरे कमरे में जाकर एक पानी का भरा हुआ प्याला लाकर साक्षी के हाथों में देते हुयें कहने लगी ! “मेरा नाम ‘यशिता’ है , रेहाना और मैं काफी सालों से दोस्त है !

“हाय... मेरा नाम साक्षी है ! और मैं यहाँ कुछ जानने आयीं हु रेहाना के बारे में ! मतलब मेरा एक दोस्त था ‘अक्ष ‘ उसे दों दिनों पहले ही फ़ासी की सजा दी गयीं , लेकिन उसने मरने से पहले रेहाना का नाम लिया था ! और जिस जेल में अक्ष को रखा गया था वहीं से पता चला के उसने रेहाना का खून किया और उसी जेल से मुझें रेहाना के घर का पता मिला और मैं यहाँ चली आयीं !” “लेकिन मैं इस बात से अनजान हु के अक्ष के साथ क्या हुआ था ? आखिर क्यों उसने रेहाना का खून किया ?” साक्षी !

“हा... वैसा ही कुछ नाम था उस लड़के का , जिसने रेहाना को मार दिया था !” यशिता !

यशिता की बातोंसे लग रहा था के वह रेहाना की यादों में चली गयीं हो , और उसकी आँखों में जरा सा पानी भी जम गया था ! साक्षी , यशिता को सवरते हुयें बोलने लगीं ! “यशिता , मैं जानती हु के तुम काफी अच्छे दोस्त थे , जो हो गया उसे हम तो नही टाल सकते ! लेकिन यशिता मैं रेहाना के बारे में सब कुछ जानना चाहती हु , मेरा ये जानना बहुते जरूरी है !

यशिता अपनी आँखों में जमे आंसू पोछते हुए साक्षी को बताने लगी !

“मैं १० साल की थी , जब हम यहाँ रहने आयें थे ! रेहाना और उसके पिताजी हमारे आने से पहले ही उस घर में रहतें थे ! उसके पिताजी यहाँ पास वाले गली के कोने पर जो दरगाह है, वहा सूफ़ी थे ! माँ नही थी उसकी , किसी बीमारी की वजह से अस्पताल में ही उसकीं माँ गुजर चुकी थी ! उसके पिताजी ही उसका ख़याल रखते थे , बहोत प्यार करते थे

उससे , रेहाना को जरा सी भी चोट लग जाती तो उसके पिताजी की जान हाथों पर आ जाती थी ! हम दोनों साथ में ही खेलते थे , सुबह से शाम ,शाम से रात भर इन् दोनों घरों में बस हमारी ही आवाजें घुमती रहतीं थी ! रेहाना उनके घर कम और हमारें घर ज्यादा रहती थी ,हमेशा मेरी माँ के पास ! मेरी माँ में ही वह अपनी माँ को देखती ! एक ही स्कूल में थे हम ,दोनों साथ में स्कूल जाते थे ! दोनों ने बारहवीं साथ ही पास आउट की , लेकिन बारहवीं के बाद उसने ध्वजराज कॉलेज में एडमिशन ली और पैसों की वजह से मुझें मेरी पढ़ाई वही रोकनी पड़ी !”

“उसके कॉलेज में जाने के बाद क़रीब ७ महीनों में ही उसका खून हुआ , रेहाना की मौत की खबर सुनते ही उसके पिताजी पागल से हो गयें थे ,खाना पीना सब छोड़ दिया ! रेहाना के जाते ही उसके पिताजी बिलकुल अकेले हो गयें थे ! जीने की कोई वजह नही थी , जीते तो भी किसके लियें, अकेली बेटी थी वह भी उसके माँ के पास जा चुकी थी ! रेहाना के मौत के बाद कुछ ही दिनों में उसके पिताजी ने खुदखुशी कर ली ! तब से यह घर ऐसेही सुनसान पड़ा है ,कुछ बचा तो सिर्फ रेहाना से जुड़ी यादें !

कुछ पल के लियें यशिता के घर में ख़ामोशी रही ! यशिता की आँखों में जमे आंसू उसकी आँखों से उतर कर उसके चेहरे पर आ चुके थे ! साक्षी फिर से यशिता को सवारने लगी ! साक्षी ने यशिता के सवरने का इंतज़ार किया और जब यशिता पूरी तरह संभल चुकी तब कुछ पल रुक कर साक्षी बोलने लगी ! “यशिता क्या तुम ऐसे किसीको जानती हो जो रेहाना के दोस्त हो , मतलब कोई उससे मिलने घर आता था या फिर कोई उसका करीबी... ?? ऐसा कोई ??”

“उसके जनमदिन के दिन काफी सारे दोस्त आयें थे उसके घर , तब उसने मिलाया था एक लड़के से ... क्या नाम था उसका ... हा याद आया .. अमन , अमन नाम था उसका ! उसनें बताया था के वह साथ में ही ध्वजराज कॉलेज में पढ़ते है !” “ बस उसी दिन मेरी उस लड़के से मुलाकात हुयीं उसके बाद वह लड़का कही दिखा ही नही !”

“ बस इतना ही जानती हु मैं रेहाना के बारे में !” “इससे ज्यादा ... !” यशिता !

साक्षी ने यशिता की सारी बातें सुन ली ! और अपने हाथ में रखें पानी के प्याले को ख़त्म कर यशिता को कहने लगी ! “यशिता...तुम्हारा बहोत बहोत शुक्रिया , जो तुमनें मुझें

इतना सब कुछ बताया !" " अब मैं चलती हु दिन भी ढल ने को है, घर जाते जाते रात हो जायेगीं !" इतना कह कर साक्षी वहा से निकल ने लगी !

"साक्षी .... एक मिनट ... मेरे पास अमन का फ़ोन नंबर हो सकता है !", "रेहाना का मोबाइल जब एक बार पानी में गिर गया था , तब रेहाना ने कुछ दिनों के लिया मेरा दूसरा मोबाइल इस्तमाल किया था ! एक मिनट , मैं लेकर आती हु !" यशिता !

इतना कह कर यशिता दुसरे कमरे में जाकर एक मोबाइल ले कर आयीं उसमे से एक नंबर निकल कर साक्षी को दे दिया ! साक्षी ने वह नंबर अपने मोबाइल में सेव कर लिया ! तभी उसे याद आया के उसने घर से निकते वक़्त अक्ष की तस्वीर अपनी पर्स में रखी थी , उसने वह तस्वीर अपने पर्स में से बाहर निकाल कर यशिता को दिखाते हुये कहने लगी !

"क्या तुम इस लड़के को जानती हो ?? मतलब तुमनें इसे कभी देखा है रेहाना के घर या फिर कभी उसके साथ ??" साक्षी !

यशिता उस तस्वीर को ध्यान से देखते हुयें नकारात्मक रूप से कहने लगी ! " नही.... मैंने इसे पहले कभी नही देखा !" "कोण हैं लड़का ?"

"अक्ष ..!" इतना कह कर साक्षी यशिता के घर से निकल गयीं !

साक्षी ने जाते जाते फिर एक बार रेहाना की घर की ओर देखा और वहा से पास में ही कुछ रिक्शेचालक अपनी अपनी रिक्शाओं के साथ खड़े थे ! उसमे से एक रिक्शा में बैठ कर निकल गयीं !

...

साक्षी जब घर पहुची तो अँधेरे ने सारी ओर अपनी चादर बिछा रखीं थी ! साक्षी ने घर की घंटी बजाईं ! साक्षी की माँ ने जब दरवाजा खोला तो उसकी माँ का चेहरा साक्षी की फ़िक्र से लतपत साफ नजर आ रहा था !

"साक्षी .....!! कहा थी तुम ..?? मैं कब से तुम्हारा इंतजार कर रही हु ! ऊपर से तुम्हारा फ़ोन भी बंद हैं ?? ह??" साक्षी की माँ !

"माँ घर में आने दोगी या फिर यही रहू मैं !" इतना कह कर साक्षी घर के अंदर चली गयीं !

साक्षी घर में आ कर सोफ़े पर बैठ गयीं और सामने ही रखे पानी के प्याले से पानी पिया और दों मिनट के लियें अपनी आँखे बंद कर ली ! शायद दिन भर की भागदौड़ से साक्षी काफी थक चुकी थी !

“साक्षी कहा थी तुम ?? तुम्हारा फ़ोन भी बंद ! तुम्हारें ऑफिस फ़ोन किया तो पता चला के तुम कब से निकल चुकी हो !” “ कहा गयीं थी तुम ?” साक्षी की माँ !

“कुछ नही माँ... बस ऐसेही एक जरूरी काम था !” साक्षी !

“ठीक हैं बेटा ..... पर तुम्हें एक बार बताना तो चाहियें के मुझें आने में देर हो जायेंगी !” साक्षी की माँ !

साक्षी अपनी माँ की बातों का कोई भी जवाब न देते हुयें सोफें से उठ कर उपर अपने कमरें में चली गयीं !

साक्षी घर तो आ चुकीं थी पर उसका मन वही यशिता की सुनाईं हुयीं बातों पर था ! उसके दिमाग में वही सारी बातें चल रही थी ! साक्षी यशिता की सुनाईं हुयीं बातों से कही कुछ कड़ी जुडती है या नही वह देख रही थी ! और मन ही मन गुनगुना ने लगी , “अमन ?? अमन से मिलना होगा ! वह शायद काफी कुछ बता सकता है रेहाना के बारे में !”

साक्षी ने पर्स में से अपना मोबाइल निकाला और उसमें कांटेक्ट में जाकर अमन नाम को चुना और उसे कॉल कर मोबाइल कान पर लगा लिया ! कुछ क्षण मोबाइल पर सिर्फ फ़ोन की घंटी सुनाईं दे रही थी ! उसके बाद सामने से आवाज आयीं , “हेल्लो .. ?”

साक्षी जवाब में बात करने लगी , “हेल्लो ... अमन ??”

सामने से फिर से आवाज आयीं , “जी ..हा ..बोल रहा हु .. आप कोण ?”

“मैं साक्षी .... मैं तुमसे मिलना चाहती हु !” साक्षी !

“बड़ी फ़ास्ट लड़की हो यार तुम .... एक मिनट पहले फ़ोन किया और अब कह रही हो मिलना हैं !” अमन !

“अमन ... मुझें तुमसे जरूरी बात करनी है .. और अच्छा होगा अगर हम मिलकर ही बात करे !” साक्षी !

“हम्म..हम्म ... तुम्हारीं आवाज से मैं अंदाजा लगा सकता हु के तुम काफी खूबसूरत हो ! और खूबसूरत लड़कियों को मैं कभी ना नही कहता ! आय मीन.. हा... , कहा मिलना है ?” अमन !

“टाइनी वर्ल्ड कैफ़े, सुबह ११ बजे ..!” साक्षी !

“हा ..वह ...तो ठीक है .. पर तुमनें बताया नही के तुम कोण हो ?” अमन !

“वह सब मैं तुम्हें मिलकर ही बताऊंगी ! मैं ठीक ११ बजे कैफ़े के बाहर तुम्हारा इंतजार करूँगी !” साक्षी !

“काफी बेताब हो... मुझसें मिलने के लियें , अब तो मिलना ही होगा ! पहोच जाऊंगा !” अमन !

साक्षी , अमन के इस बात का कोई भी जवाब ना देते हुयें मोबाइल पर फ़ोन कॉल के दौरान जो लाल चिन्ह दिया जाता है , उसे दबाकर मोबाइल को उसके पास ही जो लैंप स्टैंड था उस पर रख दिया ! और मन ही मन बातें करने लगी , “बड़ा ही अजीब लड़का है , फ़ोन पर ही फ्लर्टिंग शुरू !” , छोडो मुझें क्या करना है , मुझें तो बस रेहाना के बारे में जानना है !”

...

अध्याय ४

सुबह हो चुकी थी , ११ भी बज चुकें थे ! साक्षी रिक्शा मे बैठ कर कैफ़े की ओर आने के लियें बैचैनी से रिक्शावाले को कह रही थी , “ भैया जरा जल्दी चलाओ न !” साक्षी को डर था के कही मुझें जाने में देर हो गयीं तो अमन वहा से चला न जाये !

एक बड़ा सा जलपान गृह ,जलपान गृह ,बोलने में ही अजीब लगता है ! इसलियें कैफ़े ! एक बड़ा सा कैफ़े , जिसके अंदर प्रवेश करने लियें ही एक खूबसूरत सा, ताजे ताजे फूलों से सजाया हुआ, दिल के आकार का दरवाजा बना था ! और कैफ़े के चारो ओर दीवारों की जगह पेड़ लगे थे ! उन्ही पेड़ों के बिच और दरवाजे के अंदर काफी सारे टेबल , एक दुरसे से थोड़े थोड़े अंतर पर रखे गयें थे ! कहते है की कैफ़े प्रेमियों को मिलने के लियें अच्छी जगह होती है , यु मान लो के कैफ़े प्रेमियों के नाम ही कर दी गयीं जगह है ! वही कहियों के दिल मिलते है , कहियों के टूटते भी है ! लेकिन सिर्फ प्रेमी ही वहा नही मिलते , वहा काफी सारे लोग आते जिन्हें , एक दुसरे से अकेले में बात करनी होती है , जिन्हें थकान भरी जिंदगी से कुछ पल दूर जा कर किसी के साथ थोड़ा वक़्त बिताना होता है , वैसे ही कुछ ! उसी तरह साक्षी भी वहा गयीं थी अमन से मिलने , रेहाना के बारे में जानने के लियें !

साक्षी रिक्शा से उतरीं और रिक्शा वाले को कुछ पैसे दे कर , उस कैफ़े के दिल के आकार के बने दरवाजे के पास जा कर खड़ी हो गयीं ! और अमन का इंतजार करने लगी ! उतने में ही वहा एक नौजवान एक महंगी गाड़ी से कैफ़े की ओर आने लगा ! जैसे ही वह गाड़ी लेकर कैफ़े के पास आया उसने अपनी गाड़ी पार्किंग लॉट में लगायीं ! एक बड़ा सा काला चश्मा उसने पहन रखा था और उसके गले में एक चैन भी थी ! अपनी गाड़ी से उतर कर वह लड़का साक्षी जहा खड़ी थी उससे थोड़ा अंतर छोड़ कर वहा जाकर खड़ा हो गया !

जैसे ही साक्षी की नजर उस पर पड़ी , वह सोचने लगी के शायद यही हैं अमन ! वह उस लड़के के पास गयीं और उसे पूछने लगी , “अमन ??”

साक्षी को जवाब में वह लड़का कहने लगा , “साक्षी .!”

“चलो अंदर बैठ कर बात करते है !” साक्षी ! इतना कह कर साक्षी और वह लड़का दोनों कैफ़े के अंदर जा कर जहा एक टेबल खाली था , उससे जुडी खुर्ची पर आमने सामने बैठ गयें !

"क्या लोगी तुम ?" अमन !

"एक कप कॉफ़ी ..!" साक्षी !

साक्षी के जवाब देते ही वहा एक टेबल के पास जो लड़का खड़ा था , अमन ने उसे बुलाया और उसे कहने लगा , "दों कप कॉफ़ी !"

"तो ... कहियें क्या काम था !"

"लेकिन उससे पहले ,एक बात सून लो , तुम काफी खूबसूरत हो !!" अमन !

"काम की बात करे !!" साक्षी !

"काम की बातें तो होती रहेंगीं , लेकिन मेरे दिल में जो पहले आता है वह मैं पहले बोल देता हु !" अमन ! इतना कह कर अमन ने साक्षी को देखा , वह समज गया के साक्षी को उसकी ये बात पसंद नही आयीं !

" ओकेय .. ठीक है ! तो बताओ कोण हो तुम ? और मेरा नंबर किसने दियां ?" अमन !"

"देखों अमन में तुम्हे शुरू से बताती हु , पहले मुझें बताओ के तुम रेहाना के बारे में क्या क्या जानते हो ?" साक्षी !

रेहाना का नाम सुनते ही , अमन कुछ पल बैचैन हो गया और उसके चेहरे की सारी ख़ुशी उतर कर ख़ामोशी में बदल गयीं !

"सच सच बताओ तुम कोण हो ??" और तुम रेहाना को कैसे जानती हो ?" अमन हैरानी से साक्षी को पूछने लगा !

"देखो मैं तुम्हें सब बताती हु ..!" साक्षी !

"एक दोस्त था मेरा , अक्ष ! दों सालों से जेल में था , मैं हररोज उससे मिलने जाती थी ! और हररोज उससे बस एक ही सवाल करती थी , दोस्त थे हम लेकिन मैं अब तक नही जान सकीं के उसके साथ क्या था ! वह जेल में क्यों था !

जिस दिन उसे फ़ासी होने वाली थी उस दिन भी मैं उससे मिलने गयीं थी , उसी दिन उसने रेहाना का नाम बताया था ! जेल के इंस्पेक्टर से मुझें रेहाना के घर का पता मिला , और

वहा यशिता से मुलाकात हुयीं ! उसी ने तुम्हारा नाम बताया ! उसने बताया के तुम मिल चुके हो पहले ...!” साक्षी !

“देखो तुम जो कुछ भी जानतें हो रेहाना के बारे में प्लीज मुझें बताओ !” साक्षी !

अमन , ने साक्षी की सारी कहानी सुन ली ! तभी एक लड़का एक ट्रे में दों कप लेकर आया और जिस टेबल पर अमन और साक्षी बैठे थे वहाँ रख कर वापस चला गया ! कुछ पल रुख़ अमन बोलने लगा !

“ओह्ह.... तो तुम अक्ष की दोस्त हो ..! और तुम्हें जानना है की उसके साथ क्या हुआ था !” अमन !

“हा.... !” साक्षी !

“देखो मैं उस बारे कुछ ज्यादा तो नही जानता, पर रेहाना के बारे में जो कुछ जानता हु वो सब बताऊँगा !” अमन !

“ठीक है ! बताओं !” साक्षी !

“बारहवीं एग्जाम के बाद , ध्वजराज कॉलेज में एडमिशन ली थी मैंने ! नये कॉलेज का पहला दिन था ! मैं अपने कुछ दोस्तों के साथ अपनी बाइक पर कॉलेज पार्किंग मे बैठा था ! तभी एक लड़की साइकिल पर कॉलेज के गेट से अंदर आयीं ,चेहरे पर स्कार्प बांधा था उसने सिर्फ उसकी आँखे दिख रही थी ! वह अपनी साइकिल , साइकिल स्टैंड पर लगाने लगी तभी कुछ लड़के कार में बैठे तेजीसे उसकी ओर आने लगे और उस लड़की की साइकिल को धक्का दे कर निकल गयें !” अमन हलकी हसी के साथ आगे कहने लगा , “चार गलियां दी उस लड़की ने उन लड़कों को ! तभी उससे प्यार हो गया था !”

“उसने अपनी साइकिल उठाई और वापिस स्टैंड पर लगाईं ! और अपने चेहरे से स्कार्प को हटाया ! हा... वह रेहाना ही थी ! उसकी वो नाजुक सी आँखें ,लम्बें बाल, खूबसूरत चेहरा देखकर मैंने तय कर लिया था , के इससें तो दोस्ती करनी ही है ! ओर ऐसे वैसे मैंने उससे दोस्ती की ! फिर हम दोनों का मिलना , हर रोज बातें होती रहती थी ! एक दिन उसके जनमदिन पर उसने मुझें उसके घर भी बुलाया था , और हा .... वही मेरी यशिता से मुलाकात हुयीं ! जिसने तुम्हें मेरे बारे में बताया !”अमन इतना कह कर रुख गया !

उतनेमें ही साक्षी के मोबाइल की रिंग बजने लगी उसने अपनी पर्स में से अपना मोबाइल निकाला , सामने स्क्रीन पर नाम देखा 'माँ ' ! उसने फ़ोन उठाया और फ़ोन पर बात करने लगी , "हा.. बोलो माँ !!" सामने से आवाज आयीं , "कहा हो साक्षी तुम ,घर नही आयीं अब तक ! आज छुट्टी के दिन भी तू अपनी माँ के लिये वक़्त नही निकल सकतीं !" साक्षी अपनी माँ को जवाब में कहने लगी , " हा..माँ ... मैं बस .... आ रही हु घर !" इतना कह कर साक्षी ने अपना मोबाइल फिर से पर्स में रखा और अमन को कहने लगी , " आगे बताओ !

"देखों साक्षी , तुम्हारीं माँ घर पर परेशान हो रही है , मेरे ख़याल से तुम्हें घर चले जाना चाहियें !" अमन !

"हा...मुझें भी यहीं लगता है ! अगर तुम्हें इतराज़ न हो तो हम , कल ...??" साक्षी !

"हा..हा.. कोई बात नही .... हम कल फिर मिलेंगे ! और वैसे भी मैं तुमसें मिलने का मौक़ा कैसे छोड़ सकता हु !" अमन !

"तुम ... बहोत बोलते हो ...!" साक्षी !

"शुक्रिया जी .... !" अमन !

"मैं तुम्हें , कल कितने बजे मिलना है मेसेज कर दूंगी !" इतना कह कर साक्षी टेबल पर से अपनी पर्स उठाकर कर उस कैफ़े से निकल गयीं !

और अमन ने भी अपने वॉलेट से कुछ पैसे निकाल कर, टेबल पर दियें गयें मेनू कार्ड में रख कर साक्षी के पीछे निकल गया !

...

पुरे दिन का सबसे खूबसूरत वक़्त होता है , शाम का वक़्त ! रात से मिलने के इंतजार में दुपहर ने बिताया वक़्त , सूरज ढल ने का और चाँद का आसमान पर विजय पाने का वक़्त शाम का वक़्त !

वैसी ही एक शाम में अमन ,उसी टाइनी वर्ल्ड कैफ़े के एक टेबल पर बैठ कर साक्षी का इंतजार कर रहा था ! उसके आगे तिन कप खाली पड़े थे ! और घड़ी में ६ भी बज चुके थे ! उतने में ही साक्षी जल्दबाजी में चलते हुयें कैफ़े के अंदर आयीं और किसीको ढूँढने ने

लगी , जब उसकी नजर अमन पर पड़ी , वह चलकर अमन के पास आयीं और उसके सामने वाली खुर्ची पर बैठ गयीं !

“सॉरी सॉरी .. अमन मुझें जरा आने में देर हो गयीं !” साक्षी

“सॉरी मत बोला करो यार .... खूबसूरत लडकियों के मुह से सॉरी सुनना अच्छा नही लगता !” अमन !

“अगर तुम्हारी बकवास हो गयीं हो .. तो हम कल की बात आगे बढ़ाएं !” साक्षी !

“गुस्सा ... मत किया करो यार ... तुम्हें गुस्सा भी अच्छा नही लगता !” अमन !

“अब बोलोगे .. भी आगे क्या हुआ था ... या फिर यूंही बकवास करतें रहोगे !” साक्षी !

“ठीक हैं ....!” अमन !

“मैंने रेहाना से दोस्ती की ,उससे उसके जिंदगी का हर राज़ , हर किस्सा जानना चाहा ! पर शायद मैं ही उसे अच्छा दोस्त समजता था वह नही ! हम दोस्त तो थे पर मैं उसे उतना नही जान सका जितना जानना चाहता था !”

“एक दिन हम सारे दोस्त यूंही कैंटीन में बैठे थे ! तभी एक लड़का आया और उसने थोड़ी देर रेहाना से बात की और दोनों कही निकल गयें ! वह अक्ष था ! बादमें हररोज अक्ष और रेहाना मिलते गयें ! जब मुझें लगा के रेहाना और अक्ष एक दुसरें के काफी क़रीब आ चुकें है , मेरा रेहाना से मिलना ,बातें करना धीरे धीरे कम होता गया ! और कुछ ही दिनों बाद ख़बर मिली के अक्ष ने रेहाना का खून किया और उसे जेल में रखा गया है ! बस उन दोनों में क्या रिश्ता था , आगे क्या हुआ , क्यों अक्ष ने रेहाना को मारा , मैं कुछ नही जानता !” अमन !

थोड़ी देर के लियें अमन और साक्षी दोनों शांत रहे !

“ अब मुझें नही लगता के मैं कभी जान पाऊँगीं के क्यों अक्ष ने रेहाना को मारा !” साक्षी !

“मेरा यकीनं करो साक्षी , मुझें रेहाना और अक्ष के बारे में जो भी पता था ! मैंने तुम्हें सब बता दिया !” “अब इससे ज्यादा कुछ नही है मेरे पास तुम्हें बताने के लियें !” अमन !

साक्षी उस कैफ़े में उदास बैठी थी ! और ये शायद अमन से देखा नही जा रहा था !

“साक्षी, तुमसें एक बात पुछू ?” अमन !

“हम्म. ...!” साक्षी !

“ तुम्हें ये कहानी जानने में इतनी दिलचस्पी क्यों है ?? मतलब वो तुम्हारा बचपन का दोस्त था ... ! बचपन का .... ! मुझें नही लगता के तुम इस एक वजह से इस कहानी के पीछे हो ! मेरे ख़याल से कोई और भी वजह है इसके पीछे ! अगर तुम चाहो तो मुझें....... बता सकती हो !” अमन !

साक्षी अपनी गर्दन निचे झुकायें हुयें ही बात करने लगी , “दोस्त थे हम , बचपन के ! हमारें घर के सामने ही अपने दादाजी के साथ रहता था अक्ष ! काफी सारी यादें थी बचपन की , जैसे दिन रात मस्ती करना ,एक दुसरे को मस्ती मजाक में मारना, एक साथ खाना खाना और ऐसी बहूत सी यादें ! लेकिन वह कहते है न के अच्छा वक़्त किसीके भी नसीब में ज्यादा देर तक नही रहता !”

“एक दिन मैं अपनी माँ के साथ बज़ार में गयीं हुयीं थी ! अक्ष घर पर ही था , बहोत खुश था ! उसके पापा जो आने वाले थे , जब से उसे पता चला था के उसके पापा आने वाले है तब से बस ऊनकी ही राह देख रहा था ! तब से बस एक ही बात , मेरे पापा आने वाले है , मेरे पापा आने वाले है , वह मेरे लियें ये लायेंगे , वो लायेंगे बस वही सब चालू था....... ! लेकिन पता नही उसके घर पर क्या हुआ , जब हम घर लौटे तो पता चला के उसके दादाजी को और पिताजी को किसीने मार दिया था ...... ! तब से काफी सालों तक अक्ष गायब था !!! फिर एक दिन पता नही कहा से हमारे घर आया , मैं तो उसे देख कर हैरान ही हो गयीं थी , और खुश भी, बिछड़े दोस्त जो मिल गयें थे !”

“मुझें मेरी पढाई के खातिर अमरीका जाना पड़ा ! अक्ष यहाँ इंडिया में और मैं अमेरिका में ! लेकिन फिर भी हमारी रोज बातें होती रहती थी ! मैंने अपनी सारी पढाई ख़त्म की और इंडिया आने वाली थी , उसके पहले दिन ही मैंने तय कर लिया था के मैं पहले अक्ष से मिलूंगी , बचपन की दोस्ती जो बरकरार रखनी थी और मेरे दिल की बात भी उसे बतानी थी ...!” ,“मैंने उसे फ़ोन किया और मिलने की जगह और समय उसे बताया , लेकिन कमाल की बात तो ये थी के मैं वहा बस इंतजार करती रही , वह आया ही नही ! तब अगले दिन मुझें एक फ़ोन आया के अक्ष ने किसीका खून किया तब से रोज , हररोज मैं उससे मिलकर ये सब जानना चाहती थी .... पर उसने बताया ही नही ! उसके आगे तुम्हें पता ही है... !

ये थी वजह, जानना चाहते थे न तुम !"

साक्षी की सारी कहानी सुन कर अमन चुप रहा और बस साक्षी को देखता रहा ! उसने अपनी घड़ी में देखा तो रात के ८ बज चुके थे !

"साक्षी चलो मैं तुम्हें घर छोड़ देता हु ...! ८ बज गयें है , तुम्हारी माँ राह देख रही होगीं !" अमन !

अमन और साक्षी दोनों उस कैफ़े से बाहर निकले ! अमन ने अपनी गाड़ी निकाली और साक्षी के गाड़ी पर बैठने के बाद दोनों वहा से निकल गयें !

अमन साक्षी को सीधे उसके घर लेकर आया ! साक्षी गाड़ी से निचे उतरी और अमन को बाय कह कर अपने घर के अंदर जाने लगी !

"साक्षी ...!!!!!" अमन साक्षी को रोकते हुयें कहने लगा , "अगर... तुम चाहो तो हम मिलकर इस कहानी को आगे बढ़ा सकते हैं !"

साक्षी अमन को कोई भी जवाब ना देते हुयें अमन की ओर देख कर चेहरे पर हलकी सी हसी लाकर कर घर के अंदर चली गयीं ..!

...

अध्याय ५

"साक्षी ...साक्षी ... तुम कही भी छुपी रहो ... मैं तुम्हें ढूँढ लूंगा... ! साक्षी .. अरे कहा हो तुम ... साक्षी ...... किचन में होगी ..शायद ... साक्षी मैंने तुम्हें देख लिया ....! अरे यहाँ तो नही है ... लगता है बेडरूम में होगी..... अभी आया ...! भो.... साक्षी यहाँ भी नही , हम्म, तो तुम अलमारी में छुपी हो ...नही.... यहाँ भी नही ... कहा गयीं यार ये लड़की ! साक्षी प्लीज बाहर आ जाओ .. देखो मुझे डर लग रहा है ! अब और न डराओ .... अच्छा पता चल गया ... तो तुम आँगन में पेड़ो के बीच छुपी हो .. अब तो मैं तुम्हें ढूँढ ही लूँगा ....! पूरा घर छाना पर ये लड़की कही भी नही है .. आंगन में भी नही !"

"भो..ह ह ह ह ....!"

"आहह.ह.ह...मम्मी..म.. ... ! साक्षी... तुम पागल हो क्या ! डर गया न मैं ! कहा थी तुम ? घर में भी नही आँगन में भी नही !"

"अरे डफर , पूरा घर देखा , आँगन में भी देखा ! तो एक बार घर के पीछे देखने में तुम्हारा क्या जा रहा था ...! पागल ! एक बार वहा भी देख लेते !"

साक्षी बचपन के सपनों में खोईं थी, लेकिन एक फ़ोन की घंटी से ये सब देखा नही गया ! वह साक्षी को सपनों की दुनिया से बाहर ले आयीं !

"हेल्लो ....!" साक्षी !

"हाय....! क्या कर रही हो...?"

"अमन ... , कुछ नही बस जरा आँख लग गयीं थी !" साक्षी !

"हम्म... अक्ष के बारे में सोच रही हो ?" अमन !

"हम्म...!" साक्षी !

"साक्षी एक बात कहूं ?" अमन !

"हा.. कहो !" साक्षी !

"मुझें ऐसा लगता हैं की , तुम सच्चाई जानने खातिर अपनी असल जिंदगी से शायद दूर जा रही हो ...! हमे लगता है के हम सच्चाई के क़रीब हैं.... , पर दरसल हम सच्चाई से कोसो दूर होते है !" अमन !

"अगर सच्चाई हमे अच्छी नींद और तनाव भरे सवालों से राहत दे , तो जिंदगी जीने में आसानी होती हैं ! और ऐसी सच्चाई के खातिर हम कुछ भी कर सकते हैं !" साक्षी !

"तुम्हारी बात सहीं है साक्षी , पर मुझें बताओ के तुम्हें कुछ भी हासिल हुआ अब तक !" अमन !

"हासिल तो कुछ नही हुआ ! लेकिन इसका मतलब ये नही के हासिल होगा भी नही ! अगर हम कोशिश करे तो सच्चाई की गहराई तक जा सकते है , और हम जायेंगे ! जरूर जायेंगे !" साक्षी !

"ठीक हैं , मैं तुम्हारे साथ हु !" अमन !

"थैंक्स .. अमन !" साक्षी !

"हम्म.... साक्षी , वैसे तुम अक्ष के अलावा किसी ओर के बारे में नही सोचती !" अमन !

"तुम क्या चाहते हो ? मुझें सोचना चाहियें या नही ?" साक्षी !

"हम्म. हा ..मतलब सोचना चाहियें ! सच कहूं तो वैसे मैं बुरा नही हु !" अमन !

"अच्छा..... तो किसी ओर के बारे में सोचने का तुम्हारा सुजाव इसी दिशा में जा रहा था !" साक्षी !

"अगर तुम्हें बूरा लगा .... तो नही ! वरना हा ...!" अमन !

"बातें अच्छी कर लेते हो .. !" साक्षी !

"मैं तो बहूत कुछ कर लेता हु .... तुम बोलो ... तुम्हें क्या पसंद हैं ?" अमन !

"बस बहूत हुआ .... रखो फ़ोन !" साक्षी !

"इतनी भी क्या जल्दी है ! थोड़ी देर और करते है न बात ! वैसे मैं पार्ट टाइम शायरी भी कर लेता हु !" अमन !

“ओहह.... तो जनाब का शायरी सुनाने का मूड हैं !” साक्षी !

“अगर तुम चाहो तो ..!” अमन !

“ चलो.... कर लो अपनी ख्वाहिश पूरी !” साक्षी !

“सुनो फिर , दुनिया देखि , देखे मैंने नज़ारे सारे..... ध्यान से सुना ह !!

दुनिया देखि , देखे मैंने नज़ारे सारे

पर तुमसा हसींन कोई नही !

देखा चाँद , देखें सितारें सारे

यकीनं मानो तुमसा प्यारा कोई नही !” अमन !

“वाहहहह.. वहहह... क्या बात हैं ” साक्षी !

“शुक्रीया .... !”अमन !

“ अमन, सच कहू....... तो ये, बहूत बुरी थी !” साक्षी !

“जानता हु..... पर तुम्हारें चेहरे पर मुस्कान लाने के लियें काफी थी !” अमन !

“बस अब... रखो फ़ोन !” साक्षी !

“ठीक है , कल मिलते हैं , और आगे क्या करना है सोचते हैं !” अमन ने इतना कह कर फ़ोन रख दिया

कुछ पल के लियें सही अमन की वजह से साक्षी अक्ष के बारे में सोचना छोड़ कर अमन की बातों पर मुस्कुराते हुयें थोड़ी देर तक बस फ़ोन की तरफ़ देखती रही ! उसके बाद फ़ोन को बाज़ूमें रख कर एक लम्बीं साँस लेकर आँखे बंद करके सोंने की कोशिश कर रही थी ! पर कुछ सवाल थे जो उसके मन में ही घूम रहे थे ... जब तक उन सवालों के जवाब नही मिलते, तब तक साक्षी राहत भरी नींद नही सो सकती थी !

...

वक़्त शाम ६.१५ बजे का , साक्षी अच्छी तरह तय्यार हो कर अपने घर में एक सोफे पर बैठी थी ! खुदसे ही बातें करते हुयें कहानी को आगे बढाने की कोशिश कर रही थी !

“पहले मैं जेल गयीं , वहासे रेहाना के घर , उसके बाद यशिता , बादमे अमन और अमन की बातों में किस किसका जिक्र हुआ ! अक्ष , रेहाना , अमन , उसके दोस्त , ध्वजराज कॉलेज ! यस ... ध्वजराज कॉलेज , अब जो कुछ भी पता चलेगा यही से पता चलेगा !”

साक्षी ने सामने टेबल पर रखे अपने मोबाइल को हाथों में लिया ! उसमे से अमन का नंबर निकाल कर उसे फ़ोन किया !

“हेल्लो.....अमन !” साक्षी !

“साक्षी ... बोलो.....?” अमन !

“क्या तुम मेरे घर आ सकते हो ?” साक्षी !

“आ...सकता हु क्या... आ गया ... बस १५ मिनट !” अमन !

अमन की बात ख़त्म होने पर साक्षी ने अपना मोबाइल फिर से सामने टेबल पर रख दिया ! और अमन का इंतजार करने लगी ! लगबग १५ मिनट के बाद साक्षी के घर के बाहर से आवाज आयीं ! “साक्षी......???”

साक्षी जल्दबाजी में अपने घर के दरवाजे के पास गयीं तो सामने अमन अपनी गाड़ी के साथ खड़ा था ! साक्षी दौड़ते हुए उसके पास गयीं और उसे कहने लगी , “अमन , हमे ध्वजराज कॉलेज जाना होगा , अब जो कुछ भी पता चलेगा वहिसे !” साक्षी की बात सुनकर अमन जरा परेशानी में कहने लगा “ध्वजराज कॉलेज, वहा क्यों ? वहा किससे मिलोगी ? और कोण बताएंगे तुम्हें अक्ष के बारे में ?”

“उसके बारेमें मैंने अभी कुछ नही सोचा ... ! लेकिन हमे एक बार वहा जाकर देखना चाहियें ... शायद कोई ऐसा मिल जाए जो हमे अक्ष और रेहाना के बारे में बताएं !” साक्षी !

“क्या बकवास कर रही हो साक्षी ... अगर तुम्हें पताही नही के वहा जाकर करना क्या है ? तो तुम फालतू में वहा जा रही हो ..! और वैसे भी जहा तक मैं जानता हु , अक्ष का

किसीसे कुछ ज्यादा संपर्क नही था , तो हम मिलेंगे किससे ? और कोण बतायेंगा हमे उसके बारे में !" अमन !

"तुम मेरे साथ चल रहे हो .. या नही ?" साक्षी !

"साक्षी ..पर.....???" अमन !

"सिर्फ हा या ना ! या मैं अकेली जाऊ ?" साक्षी !

"अच्छा ठीक है ! चलता हु !" अमन !

जैसे ही अमन साक्षी के साथ आने के लियें मान गया ! साक्षी अपने घर में गयीं और टेबल पर रखे अपने मोबाइल को साथ लिया और दौड़ते हुयें अपने कमरे में जाकर अपनी पर्स में उसे रख दिया ! उसने अपने बेड के बाजु के ड्रावर को खोला और उसमे से एक तस्वीर निकाल कर उसे भी अपनी पर्स में रख दिया ! घर के बाहर आ कर अमन की गाड़ी पर बैठ गयीं ! अमन ने गाड़ी को चालू किया और दोनों साक्षी के घर से निकल गयें !

अमन और साक्षी दोनों साथ में ध्वजराज कॉलेज की ओर जा रहे थे तभी एक बड़ी चारचाकी उनके सामने से गुजरने लगी , जिसमे देवा अपने सहयोगी शिवा के साथ कही जा रहा था ! उसी वक़्त शिवा की नजर अमन और साक्षी पर पड़ी और वह देवा से कहने लगा , "भाई.... वह देखो.... सामने ..!"

"साला... हरामखोर... इसकी तो मैं.... ! शिवा गाड़ी घुमा इसको छोडूंगा नही मैं आज , इसे काम करने भेजा था ! और ये साला उस लड़की के साथ अय्याशी कर रहा है !" देवा, अमन और साक्षी की ओर देखते हुयें शिवा से कहने लगा ! वही दूसरी ओर साक्षी और अमन देवा के सामने से निकल गयें

"भाई... आप रुको मैं जाता हु ! मैं समजाता हु न उसे !" शिवा !

"समजाने का वक़्त नही है शिवा...! सिर्फ एक दिन का काम था ! काम हो गया था , तो ये उस लड़की के साथ क्यों घूम रहा है अब ?" देवा अपना गुस्सा जताते हुयें बोलने लगा !

“भाई... भाई....आप गुस्सा मत हो ! मैं ..में फ़ोन करता हु उसे !” शिवा देवा को समजाते हुयें कहने लगा ! शिवा ने अपनी जेब में से अपना मोबाइल निकाला और कुछ पल मोबाइल पर उंगलियाँ घुमाने के बाद मोबाइल को कान पर लगा लिया !

“शिवा... फ़ोन स्पीकर पर डाल !” देवा !

“जी... भाई !” शिवा ! इतना कह कर शिवा ने अपने मोबाइल के स्पीकर को सक्रीय किया ! कुछ देर तक मोबाइल पर सिर्फ रिंग बजती रही !

“भाई .. फ़ोन नही उठा रहा !” शिवा !

“शिवा , एक काम कर पीछा कर दोनों का ! घसीटते हुयें ले कर आ उसे ! साले को छोडूंगा नही मैं आज !” देवा !

“हा.. भाई... मैं लेकर आता हु उसे !” शिवा !

इतना कह कर शिवा उस चारचाकी से निचे उतरा और एक रिक्शा को रोक कर अमन और साक्षी के पीछे जाने लगा !

...

साक्षी और अमन दोनों कॉलेज जाने के रास्ते पर ही थे तभी बादल जोरोसे गरजने लगे ! और हलकी सी बारिश की बुँदे भी गिरने लगी !

“अमन शायद हमे कही रुख जाना चाहियें !” साक्षी अमन से कहने लगी !

“साक्षी .... यहाँ आसपास ऐसी कोई जगह नही है जहा हम रुख सकते हैं ! लेकिन यहाँ पास में ही एक होटल है ! हम वहा कुछ देर रुख कर फिर कॉलेज जायेंगे !” अमन !

साक्षी और अमन होटल पहोच ही चुके थे ! लेकिन वहा जाने से पहले ही दोनों पुरी तरह भीग गए थे ! अमन अपने बालों से पानी झाड़ते हुयें होटल के रिसेप्शनिस्ट के पास जा पहोचा ! वहा जाने बाद अमन ने उससे एक कमरे की मांग की , उस कमरे की चाबी और साक्षी को लेकर अमन कमरे में गया !

उसी कमरे की अलमारी में कुछ कपडे भी थे , अमन ने उसमें से उसके लियें कुछ कपडे निकाले और बाथरूम में जाकर उसे पहनकर बाहर आया ! तभी साक्षी ने भी खुदको टॉवल से पोछ कर उसी कमरे के बाल्कनी में जाकर बैठ गयीं !

अमन ने साक्षी को बाल्कनी में बैठा देखा , और वह उसकी ओर जा ही रहा था के वहा पास में ही रखे साक्षी की पर्स को उसका धक्का लग गया और साक्षी की पर्स निचे गिर गयीं ! उसमे से सारा सामान उस कमरे में फेल गया ! साक्षी ने देखा और वह वहा जाकर अमन को वह सामान उस पर्स में रखने में मदद करने लगी ! तभी साक्षी ने घर से निकलते वक़्त जो तस्वीर पर्स में रखी थी , उस पर अमन की नजर गयीं , और उसने उस तस्वीर को उठाया और साक्षी से कहने लगा !

"साक्षी ... ये लड़का कोण हैं? तुम्हारा बॉयफ्रेंड है क्या ?" अमन !

साक्षी ने अचंभता पूर्वक नजरों से अमन को देखा और कहने लगी , "नही ... मेरा कोई बॉयफ्रेंड नही है , ये दोस्त है मेरा !"

साक्षी ने अमन को उसके सवाल का जवाब तो दे दिया था लेकिन फिर भी साक्षी अमन को सवालों भरे नजरोसे बस देख रही थी !

"अमन... !" साक्षी !

"हा.. बोलो..!" अमन !

"मुझें लगता है के ...... ये बारिश दो से तिन घंटे तक नही रुकने वाली !" साक्षी !

"हां..... मुझें भी ऐसा ही लग रहा है !" अमन !

"तो ... इस बारिश की मौसम में क्या लेना पसंद करोंगे , मतलब चाय या कॉफ़ी ?" साक्षी !

"तुम जो दोगी वह ले लूँगा ! बनाओ जो तुम्हें पसंद है वो बनाओ !" अमन !

जबतक साक्षी अमन के लियें कुछ बनाती तबतक अमन बाल्कनी में खड़ा होकर बाहर के नज़ारे का आनंद ले रहा था ! और थोड़ी ही देर में साक्षी दो कप ले कर आयीं और उसमे से एक कप अमन को सोफा और दुसरे कप को खुदके हाथ में ही रखा !

और देखते ही देखते कुछ ही पल में अमन ने अपना पूरा कप खाली कर दिया !

"वहह..साक्षी क्या कॉफ़ी बनाईं तुमनें वहह....!"अमन !

"थैंक यू , अमन !" साक्षी!

“वैसे तो....” अमन कुछ बोल ही रहा थे के तभी उसे चक्कर आने लगे , “साक्षी क्या था कॉफ़ी में ?? क्या दिया तुमने मुझें ?” अमन अपना कहना तक पूरा नही कर पाया और कुछ ही मिनटों में वह निचे गिर गया और बेहोश हो गया !

“अमन .... अमन.... उठो अमन नींद पूरी नही हुयीं ? या फिर दो गोलियां और मिला के दू कॉफ़ी में !” साक्षी अमन को बेहोशी से बाहर लाते हुयें कहने लगी !

अमन धीरे धीरे अपनी आँखों को खोलते हुयें कहने लगा , “साक्षी ये क्या पागलपन है , मुझें क्यों बांध कर रखा है यहाँ और ...और.... क्या डाला है मेरे शरीर पर ?.............. पेट्रोल..........क्या तुमने मुझपर पेट्रोल डाला है ??”

“हा....अमन...हा..... पेट्रोल ..! तुम्हारी कॉफ़ी में नींद की गोली मिलाकर , तुम्हारे बेहोश होने के बाद तुम्हारी ही गाड़ी में से पेट्रोल निकाल कर तुमपर ही डालने के लियें मुझें आधे घंटे से ज्यादा वक़्त नही लगा !” साक्षी !

“साक्षी.... पर ..क्यों.....मैंने क्या बिघाड़ा है तुम्हारा ? आखिर ये सब किस लियें ?” अमन !

“सब सवालों के जवाब मिल जायेंगे , पहले मुझें ये बताओ तुम हो कोण??” साक्षी !

“तुम सच में पागल हो गयीं हो साक्षी...... तुम्हें पता भी है के तुम क्या बोल रही हो ?” अमन !

“अमन ... मुझें सिर्फ मेरे सवाल का जवाब दो ! तुम हो कोण और तुमने मुझें झूठ क्यों कहा के तुम अक्ष और रेहाना को जानते हो !” साक्षी !

“ साक्षी ...मैं ...मैं सच में अक्ष और रेहाना को जानता हु ...! और तुम ऐसा क्यों पूछ रही हो .... मैंने तो तुम्हे पहले ही सब बताया है न , तो फिर ये सब किस लियें ?” अमन !

“देखो अमन .. , मैं आखरी बार पूछ रही हु ... सब सच बताओ के तुम हो कोण ? वरना ७ मिनट से ज्यादा वक़्त नही लगता किसीको पूरी तरह जलकर मरने के लियें !” साक्षी !

“साक्षी , तुम ऐसा क्यों कर रही हो ..... और मुझें समज नही आ रहा तुम इतने गुस्से में क्यों हो ? क्या किया है मैंने ?” अमन !

साक्षी एक तस्वीर को हाथों में लेकर अमन से कहने लगी , "चलो... छोडो ... मुझें बताओ ये लड़का कोण है ?"

"ये..ये..तो... तुम्हारा दोस्त है न.. अभी तो बताया तुमने !"अमन !

साक्षी उस तस्वीर को निचे रखते हुयें अपने मोबाइल में एक फोटो अमन को दिखाते हुयें पूछ ने लगी , "चलो.... वह ... भी ...रहने .....दो ये बताओ ये लड़की कोण है ?"

"साक्षी ??? क्या चल रहा है, मैं नही जानता यार... ये कोण है ?" अमन !

"ओह्ह... तो तुम इस लड़के को भी नही जानते और नही इस लड़की को ! तुम्हें पता है ये कोण है ? ये लड़की रेहाना है और वह लड़का मेरा बचपन का दोस्त अक्ष है !" साक्षी !

जब साक्षी ने अमन को बताया तब अमन सब समज गया के उसके झूठ बोलने का अब कोई फायदा नही !

"ओह्ह.. तो ये बात है ! काफी होशियार हो साक्षी तुम .... एक गलती क्या हुयी मुझसें तुमने तो मेरा झूठ ही पकड़ लिया !

"हा.. लेकिन अब सिर्फ ५ मिनट है तुम्हारे पास सबकुछ बता दो ! वरना माचिस मेरे हाथ में ही है !" साक्षी !

"साक्षी.... अब तुम्हें ... पता चल ही गया है तो . .. मैं बताता हु सब लेकिन पहले मेरे हाथों की ये रस्सी छोडो ! यकीनं करो मुझ पर मैं तुम्हें बताये बिना कही नही जाऊंगा !"अमन !

"मुझें भरोसा नही है तुम पर .. जो कुछ बताना है ऐसेही बताओ !" साक्षी !

" ठीक है ... तो सुनो ... मैं अमन नही हु ! और नहीं मैं किसी अक्ष को और रेहाना को जानता हु ! मेरा नाम माधव है, मुझें बस तुम्हारी एक तस्वीर दी गयीं थी ! और कहा गया था के मुझें तुमसे मिलना है और तुम्हे बस इतना बताना है की मैं अक्ष और रेहाना को जानता हु !" माधव !

"व्हाट....क्यों .....और किस लियें ?" साक्षी !

"देखो साक्षी ... ये बस एक कहानी रचीं गयीं है .... एक झूठी कहानी ! तुम्हें बस ये एहसास दिलाने के लियें की अक्ष ने रेहाना को मारा है क्यों और कैसे सब ! मुजसें कहा गया था के , मैं तुमसें मिलु और तुम्हें बताओ के अक्ष.. और !" माधव !

"रुको मत ..... बोलते रहो .....!" साक्षी !

"हा...... मुझें तुम्हे ये बताना था के अक्ष और रेहाना..... एक दुसरे के काफी क़रीब थे ! और रेहाना , अक्ष से प्यार करती थी ! लेकिन अक्ष रेहाना को सिर्फ इस्तमाल करना चाहता था ! उसने रेहाना को झूठे वादें करके फसाया और अक्ष की वजह से ही रेहाना प्रेगनेंट थी ! जब रेहाना ने अक्ष को शादी करने के लिए कहा , तब अक्ष को गुस्सा आया वह इस बात के लियें राज़ी नही था ! लेकिन रेहाना उसे जोर देने लगी दोनों में काफी झगड़े हुयें उसी वक़्त हाथापाई में अक्ष से रेहाना का खून हुआ !" " ये बताना था मुझें तुम्हे लेकिन जब मैंने तुम्हें देखा तो मुझें लगा के थोड़ा झूठ बोल लूँगा तो तुम्हारे साथ कुछ पल बिताने का मौका मिलेगा.... ! इसी ...लियें... मैंने.. तुम्हें...वह....!" माधव!

"इसका मतलब....... .. इसका मतलब मेरा रेहाना के घर जाना यशिता से मिलने तुमसे मिलना महज एक कहानी थी ! जो पहले से ही तय की गयीं थी !" साक्षी !

"हा... यही सच है ...! तुम्हारा यशिता से मिलना मुजसें मिलना कोई सयोंग नही था ...ये पहले से ही तय किया हुआ था !" माधव !

साक्षी ये सारी कहानी सुन कर हैरान थी ... उसके मन में सवालों का भवंडर आतंग मचा रहा था !

"किस लिए ये सब ? और किसने किया ये ?" साक्षी !

"साक्षी तुम मेरी मानो तो तुम इन झगड़ो में मत पड़ो ये बहूत ख़तरनाक लोग है !" माधव !

"मुझें बस उसका नाम बताओ जिसने ये सब साजिश रची है !" साक्षी !

"देवा...., देवा नाम है उसका ! उसने ये क्यों किया मैं नही जानता पर उसी ने ही मुझें ये सब करने भेजा था !" माधव !

"पहले मुझें तो लग रहा था के कहानी में कुछ गड़बड़ है , लेकिन अब जब सब पता चल गया है तो जो चाहे हो जाये अब तो मैं सच्चाई का पता लगाकर ही रहूंगी !" साक्षी !

"बताओ , कहा मिलेगा ये देवा ... ?" साक्षी !

"साक्षी.... देवा कोई आम आदमी नही है , गुंडा है वह गुंडा ..... कुछ भी कर सकता है , पुलिस उसे पकड़ना चाहती है पर वह अब तक उनके हाथों नही लगा ...., बड़े बड़े उधोगपतियों से पैसे हडपना ,हत्यार की लेन देन ,लड़कियों को बेचना, लोगों के घरों पर कब्ज़ा करना ... यही सब उसका काम है ..... !

"साक्षी .... मेरी बात सुनो जल्दबाजी में कोई फैसला मत करो तुम्हें लगता है ये इतनी सीधी बात नही है ! सोचो अगर देवा ने इतनी कहानी रची है तो जरूर कुछ बड़ी वजह रही होगी !" और मैं तुम्हे कोई भी गलत कदम नही उठाने दूंगा ! साक्षी .. मैं ..मैं तुम्हें चाहने लगा हु ! और मैं नही चाहता के तुम्हें कुछ हो.... !" माधव !

"ख्वाईशों को बंदिशों घिरा हुआ एक गुलाम है तू ,,..... जो सपने देख सकता है , लेकिन कभी पूरा नही कर सकता ...! खूबसूरती क्या देख ली लग गयें उसके पीछे ! कोई जरूरत नही है तुम्हारी !" साक्षी !

"साक्षी मुझें ... पता है के तुम काफी होशियार हो , और खूंखार का भी नमूना अब देख चूका हु ! लेकिन वह .. .. , सुनो... देवा के सामने तुम्हारी ये मरदानगी किसी काम नही आने वाली ! वह कुछ भी कर सकता है !" माधव !

"अगर लड़कियाँ चाहें तो पूरी दुनिया से लड़ सकती है , बस इंतजार होता है सही वक़्त का , अब तो मैं इस देवा से मिलकर ही रहूँगीं, मुझें तुम्हारी कोई जरूरत नही निकलो यहाँ से !" साक्षी !

साक्षी माधव की कोई भी बात सुनने के लियें राजी नही थी ! उसके मुह से निकला हर लफ्ज़ उसके गुस्से से उभर कर आ रहा था !

"अगर एक और मिनट भी तुम यहाँ रहे तो तुम अभी भी पेट्रोल से भरे हो और मेरे हाथ में अभी भी माचिस है !" साक्षी !

माधव , साक्षी के गुस्से का सामना नही कर पाया और उस होटल के कमरे से बाहर निकल गया ! जैसे ही माधव एक तरफ से उस होटल से बाहर गया वही दूसरी तरफ शिवा दो तिन आदमियों के साथ उसी होटल के अंदर आया !

शिवा और उसके सहयोगी जिस कमरे में साक्षी और माधव रुके थे उस कमरे में गयें ! साक्षी उस कमरे में कुछ सोचते हुयें बैठी थी , जब उसकी नजर शिवा पर पड़ी वह कहने लगी , “कोण ..कोण .. हो तुम और यहाँ अंदर कैसे आये ?”

शिवा ने साक्षी को कोई भी जवाब न देते हुयें उसके साथियों को कहने लगा , “ उठाओ इसे ...!

...

अध्याय ६

शिवा साक्षी को उस होटल से उसके हाथों को बांध कर , मुह पर पट्टी लगाकर सीधे देवा के घर लेकर आया ! और उसे एक कमरे में बंद करके रखा ! जिस कमरे में शिवा ने साक्षी को बंद करके रखा , वहा कमरे के चारोंओर आयने लगे हुयें थे , कमरे की सारी दीवारें आयनों के पीछे छुपा दी गयीं थी ! और उन सारे आयनों में साक्षी का प्रतिबिम्ब नजर आ रहा था ! उसी कमरे में साक्षी के अलावा तकरीबन तिस से चालीस तितलियॉ एक एक धागे से बंधे हुयें ऊपर से निचे की ओर छोड़ दी गयीं थी पर वह जिंदा थी तो फडफडा रही थी ! सारी तितलियाँ अलग अलग रंग की थी , जैसे मानो उन तितलियों की वजह से दुनिया का हर रंग उस कमरे में मौजूद हो ...! वह सारी तितलियाँ उस कमरे से बाहर जाना चाहती थी ,लेकिन दो चीज़े उन्हें बाहर जाने से रोक रही थी ! एक उस कमरे में आयने थे , तो वह समज नही रही थे के दरसल उस कमरे से बाहर जाने का रास्ता कहा है , और दूसरा ये था के वह धागे से बंधी हुयीं थी, तो वह धागे उन्हें उस कमरे में सिर्फ उतनी ही दूर फडफडाने की आझादी दे रहे थे जितनी दूर वह धागे जा सकते थे ! जैसे की वह तितलियाँ उस कमरे में कैद थी , कैदी थी वह उस कमरे की और वह धागे उन्हें बांधें रखे हुयें जंजीरे !

साक्षी को उस कमरे में तितलियों का साथ मिल चूका था ! साक्षी चिल्लाने की कोशिश कर रही थी ! पर उस के मुह पर लगी वह पट्टी उसकी आवाज को बाहर नही आने दे रही थी ! जिस रस्सी से साक्षी को बांधा गया था , साक्षी उसी रस्सी से जीतोड़ छुटकारा पाने की कोशिश कर रही थी लेकिनं वह नाकामियाब रही ! और उसकी हर हरकत उस कमरे में मौजूदा हर आयने में दिखाई जा रही थी !

साक्षी खुदको छुड़ाने की कोशिश ही कर रही थी के तभी उसे किसी एक आयने की ओर कुछ हरकतें नजर आयीं ! ठीक उसी आयने से बाहर से अंदर की ओर आने जाने का रास्ता था ! वही से देवा और उसके पीछे पीछे शिवा एक खुर्ची लेकर अंदर आया ! शिवा ने उस खुर्ची को ठीक उस कमरे के मध्य हिस्से में रखा और उस खुर्ची के पीछे खड़ा हो गया ! और देवा उस खुर्ची पर बैठ गया !

"तो.. बताओ साक्षी , कैसी हो ? कैसा लगा है कमरा ? अच्छा है न !" तितलियाँ न मुझें बहोत पसंद है ! और हर पसंद आयीं हुयी तितली को मैं यु देखो...देखो.... ऐसे हा ऐसे धागे से बांध कर रखता हु ! ध्यान से देखो इन तितलियों को ये कितना संघर्ष कर रही है , यहाँ से बाहर जाने के लियें , कितना लड़ रही है उन धागों से , कितनी फडफडा रही है लेकिन ये धागे उससे कही गुना शक्तिशाली है ! और दूसरा ये आयने देखो , ये इंसान की हर हरकतों पर नजर रखते है ! इंसान की हर हलचल को कैद करके रखते है !"

देवा अपने आप ही बोले जा रहा था ! और साक्षी कुछ कहने की कोशिश कर रही थी पर उसके मुह पर लगी पट्टी की वजह से वह कुछ कह नही पा रही थी !

"शिवा खोल दे इसके मुह की पट्टी !" देवा ! देवा के कहने बाद उसके खुर्ची के पीछे खड़ा शिवा साक्षी के पास गया और उसने उसके मुह की पट्टी निकाल दी !

"कोण हो तुम....? और ..और मुझें यहाँ बांध कर क्यों रहा है ? तुम मेरा नाम कैसे जानते हो ? और क्यों लाया है मुझें यहाँ ? बताओ मुझें कोण हो तुम?" साक्षी के मुह से पट्टी निकलते ही उसने देवा के सामने सवालों का पेड़ खड़ा कर दिया !

"अरे..रे..रे... साक्षी तुम मुझें नही जानती ? पूरा शहर मुझें जानता है और तुम नही जानती ! हम्म.. तुम्हारी भी कोई गलती नही है ! पूरा शहर मेरा नाम जनता है पर मेरा चेहरा नही पहचानता ! ठीक है .. कोई बात नही ! तुम्हें पढ़ना तो आता ही होगा , हह.. ! तो देखो ये नाम देखो मेरी कलाई पर बना है .... ' देवा ' .... क्या 'देवा.....' ! पढ़ लिया न !" देवा अपना हाथ साक्षी को दिखाते हुयें उससे कहने लगा !

"ओहह... तो तुम हो देवा... ! जाने अनजाने में सही हमारी मुलाकात हो ही गयीं ! चलो अच्छा हुआ ,बहूत से सवाल करने है तुमसे !" साक्षी !

"ये हुयीं न बात .....! कमाल की बात बोलू मुझें भी बहूत से सवालों के जवाब देने है तुम्हें ! जिस रहस्यमय कहानी के पिच्छे तुम हो उस से जुड़े जवाब , लेकिन उससे पहले मुझें एक बात बताओ , ये साला कुत्ता माधव कहा भाग गया !" देवा !

"अपने कुत्ते को संभल कर नही रखते क्या ! भाग गया होगा कही !" साक्षी !

"अहा..हा...हा..हा.. ! क्या बात है , देख शिवा देख ! देवा के सामने उची आवाज में बात कर रही है ये लड़की देख..... ! क्या डेरिंग है इसके अंदर , मान गए !"

“बताओ मुझें .....! क्यों भेजा था माधव को मेरे पास , एक झूठी कहानी लेकर !” साक्षी !

“फ़िक्र मत करो मेरी जान , तुम कहानी के आखरी पड़ाव में हो और यहाँ हर राज़ खुलेगा .. हर राज़ ! बस थोड़ा सब्र करो ! मेरे साथी एक और कैद की हुयीं तितली को लेकर आ रहे है ! बस उनके आने का इंतजार करो........ ! लो ... आ गयें .. चलो अब इंतजार करने की जरूरत नही है !” देवा , साक्षी से बात ही कर रहा था .. तभी दों लोग एक लड़की को अपने दोनों हाथों से पकड़ कर लेकर आये ... वह लड़की कमजोर और घायल नजर आ रही थी ... उसके चेहरे पर लगे खून के निशान उस पर कियें गयें जुल्मों की कहानी बता रहे थे !

उसे देख कर साफ नजर आ रहा था के उस पर काफी अत्याचार हुयें है ! लेकिन फिर भी सारे अत्याचारों को झेलकर भी वह जिंदा थी यही हैरान कर देने वाली बात थी !

“कोण है ये लड़की ?? और ???” साक्षी !

“रुको... साक्षी ...रुको...जरा .... सब बताता हु ... चलो शुरवात से शुरू करते है !”

“तो.. अक्ष जेल में था ! उसे रेहाना के खून के इल्जाम में फ़ासी हुयी !” देवा !

“तुम .. तुम... अक्ष को जानते हो.. रेहाना को भी... कैसे ?? और तुम्हें ये सब कैसे पता !” साक्षी !

“अरे... कहा ना... सब्र करो बताता हु सब ! तो....अक्ष को जब जेल में रखा गया था तब तुम हररोज उससे मिलने जाती थी ! बस एक ही सवाल ... एक ही सवाल .. तुमनें क्या किया ?यहाँ इस हालात में कैसे ? ऐसा वैसा ... ! अब तुम ये सोच रही होगी के मुझें ये सब कैसे पता चला ! है न.... ! उसी जेल में एक हवालदार था , जिसको एक खबर देने के लियें हजार रुपयें मिलते थे ! वही सब बताता था ! और हा... उसीने बताया के तुम फ़ासी के अगले दिन भी उसी जेल गयीं और तुम्हें रेहाना के बारे में पता चला ! मैंने सोचा रेहाना का नाम ही तो पता चला है ... क्या उखाड़ लेगी ये .....! पर तू तो बहूत कामिनी निकलीं , उसके घर का पता लेने की क्या जरूरत थी !”

“तभी मैंने सोचा के तुझें मार देता हु .. ट्रक के निचे कुचलकर... ख़त्म कहानी ! लेकीन बहूत से लोग हमे कम दिमाग वाले समजते है , उनको लगता है के हम्हारे पास हत्यार

है, पैसा है , सब है लेकिन दिमाग नही ! हम्हारे जातीं के लोगों का भविष्य धोके में था , तो उसी दिमाग से मैंने एक प्लान बनाया !”

“हिंदुस्तान में न ... बहूत लोगों पर एक्टिंग का जूनून सवार है , उनको बस उनकी कला दिखाने का मौका चाहियें ! और ऐसी ही एक लड़की को अपना शिवा लेकर आया , उसको उसके डायलोग दियें और रेहाना के बाजु वाले घर में भेज दिया ! और हा... वह घर भी अपना ही था ! उस लड़की को जो कुछ भी बोला गया था ... माशाल्लाह !!! उसने बखूबी निभाया ! लेकिन इस चुतियें माधव ने पुरे प्लान की ऍम बी एक कर दी ! उसे बस इतना कहना था के अक्ष की वजह से रेहाना प्रेगनेंट थी , अक्ष शादी करने के लियें तयार नही था , दोनों में लडाईझगडे हुयें और अनजाने में अक्ष ने रेहाना को मार दिया बस.......! पर हरामखोर ने पता नही तुझको क्या बताया और क्यों ?? “

“शिवा को तेरे साथ साथ उस को भी पकड़कर लाने के लियें कहा था , पर वह कमीना भाग गया !”

“अब रहा सवाल अक्ष और मेरा क्या रिश्ता है , और ये लड़की कोण है !”

“तो..... ११ साल का था अक्ष, चाकू लेकर मुझें मारने आया था ! गलती हो गयीं थी मुझसे ! जब उसके बुड्डे को पाणी भर भर कर मारा और बाप को खंजर से मारा था तब अक्ष को भी मार देना चाहियें था ! लेकिन मुझें पता ही नही के ये घर में छुपकर सब देख रहा है ! बच्चा था , मुझें लगा के अगर इसे दो टाइम का खाना , अच्छे कपडे , थोड़े पैसे वैसे दूंगा तो ये मेरे काम आ सकता है ! और वैसा हुआ भी !”

“मेरा हर काम अक्ष करता था ...! सब दिया था उसको .... दौलत , सारे ऐशोआराम सब... लेकिन साला इस लड़की के पीछे पागल था !”

“जानती हो साक्षी.. ये लड़की कोण है ?”देवा !

“क्या बकवास है ... मुझें कैसे पता ये लड़की कोण है !” साक्षी !

“अभी भी .... नही जान पायीं साक्षी ..इसे..... क्या यार.... अरे .. यही तो है रेहाना !” देवा !

“ये...ये.. रेहाना है... ये रेहाना नही है ! मैंने उसकी तस्वीर देखि है ! जेल के इंस्पेक्टर से मैंने उसकी फोटो से अपनी मोबाइल पर फोटो भी खिची थी !” साक्षी !

साक्षी के इस बात को कहते ही देवा ज़ोरों से हसने लगा ! “तो मैंने कब ना कहा ! तुमनें रेहाना की ही तस्वीर देखि थी !” देवा !

“हा...पर...वह ...लड़की ये नही थी !” साक्षी !

“बिलकुल ठीक वह ये थी ही नही ,रुको रुकों.... तुम्हारी सारी कन्फ्यूजन दूर करता हु ! दरसल साक्षी ...इस कहानी में दों रेहाना है ....! इसके बारे में बादमे बात करते है !”

“पहले जिसके क़त्ल के इल्जाम में अक्ष को फ़ासी हुयीं वो ! वह एक जर्नलिस्ट थी , जो हम्हारे खिलाफ़ सपूत इकठठा कर रही थी ! साली ने पता नही कहासे इतने सपूत इकठ्ठा कर लियें , के हम्हारा फ़ासी पे जाना तय था ! अक्ष ने कियें हुयें हत्यारों की लेनदेन ,सब था उसके पास !

ऐसेही हम यहाँ , इसी घर में बैठे थे तभी छुपके से वह घर के बाहर से सब देख रही थी तभी मेरी उस पर नजर गयीं ! पकड़ लियां उसे ! और देखा उसके कैमेरे में तो , हमने कियें हुए क़त्ल का विडियो , अक्ष का , शिवा का सब का ... कुछ फोटो थे , कुछ नामों की लिस्ट थी ! अक्ष के ही काफी सारे सपूत थे उसमे ! अगर ये किसी के हाथों लग जाता ना....अपना धंदा और इन् सब लोगों का खानेपीने का जरिया सब बंद हो जाता ! शिवा को बस एक इशारा किया , मार दिया उसने उस जर्नलिस्ट रेहाना को ... ख़त्म रेहाना ....! जर्नलिस्ट रेहाना मक़सूद !”

“अब सुनो ये रेहाना कोण है ! यही तो है जिससे अक्ष प्यार करता था , रेहाना ..रेहाना.. बताओ इसे ... अपने बारे में ,चलो छोडो... तुम बोलने की हालत में नही हो... मैं ही बताता हु !”

“उसी दिन जिस दिन उस जर्नलिस्ट को मारा अक्ष... कहने लगा शादी करना चाहता है रेहाना से ,प्यार करता है उससे ! ऐसे ही मजाक में बोल दियां मैंने अक्ष को के मत कर शादी वैगरह , लेकर आ इस रेहाना को .... अच्छे दामों में बेच दूंगा और पूरा मुनाफा तू रख ले ! साले के चेहरे का गुस्सा देखने लायक था , नीला हो गया था गुस्से के मारे ! मुझें लगा भूल जाएगा एक मजाक समज कर ! लेकिन होते है कुछ लोग , जो गुस्से को और नफरत को अंदर ही अंदर दबा कर रखते है और एक साथ बाहर निकालते है !”

“हम जितना चाहे किसीकी नफरत को छुपाने की कोशिश करे , लेकिन नफरत की आंधी में बढ़ा हुआ पेड़ हम पर ही गिरता है ! क्या कुछ नही किया मैंने अक्ष के लियें , सब किया लेकिन उसके अंदर तो नफरत के उबाले पहले से ही उबल रहे थे ! अपने दादाजी और पिताजी

के बदले कि आग और ये रेहाना के बारे में बुरा कहना उसी वजह से शिवा के हाथों का हत्यार मुझ पर ही तान कर खड़ा हो गया ! लेकिन जो चाहे हो जाये , चाहे कितने भी लोग मुझें धोका दे दे ... अक्ष , माधव .. लेकिन ये साला शिवा कमाल का बंदा है ! जब शिवा ने देखा के अक्ष मुझ पर बंदूक तान कर खड़ा है , पीछे से एक बड़ा सा लोहे का रॉड उसके सर पर डाल दिया , अच्छा किया ! बेहोश हो गया था कुछ घंटो के लियें ! बेहोश होने के बाद बांध कर रखा उसे !"

"जब उसने ने आँख खोली तो उसके सामने इस रेहाना को रख दिया मैंने , कमीना इसी की वजह से मुझें मारनेवाला था , तो सोचा देखूं तो सही उस तितली को जिसकी वजह से मुझें मारने के लियें तयार हो गया ! उठाया इसे और अक्ष के सामने रख दिया ! अपनी रेहाना को देख कर बेचारा पागल सा हो गया था , कहने लगा ..देवा...देवा... प्लीज छोड़ दे उसे ...छोड़ दे .....तुझें जो कुछ करना है मेरे साथ कर ... लेकिनं उसको कुछ मत करना ... छोड़ दो उसे .. तुझें मारना है तो .. तू मुझें मार ... मुझें मार लेकीन उसे छोड़ दे ...!" देवा क्रूरतापूर्वक हसी के साथ बोल रहा था जिसे सुन साक्षी के चेहरे पर देवा के लियें गुस्सा और भी बढ़ता जा रहा था ! लेकिन उसके हाथ बंधे होने की वजह से वह अपने गुस्से को चेहरे पर दिखाने के अलावा कुछ नही कर सकती थी !

देवा आगे कहने लगा , "गलती कोई भी हो .... उसकी सजा तो सामने वाले को मिलनी ही चाहियें , वह छोटी हो या बड़ी कोई मायने नही रखती ! बस वह गलती है इतना ही काफी है ! सामने वाला हम्हारे कितने भी क़रीब क्यों न हो ... वह बचपन से हम्हारे साथ हो या फिर हम्हारे लियें काम करता हो जो कुछ भी हो ... ! अगर उसने गलती की है तो वह सजा के लायक़ है , और वही मैंने किया !"

"सामने एक रेहाना की लाश तो पड़ी ही थी , दूसरी रेहाना रो रही थी , अक्ष हाथ फैला रहा था ! अक्ष को बोल दिया के अगर तू पोलिस स्टेशन जा कर कह देगा के इस जर्नलिस्ट रेहाना को तूने मारा है , तो मैं तेरे इस रेहाना को छोड़ दूंगा ! फिर क्या था ... वही फिल्मों वाला इमोशनल सिन , और मेरे से इमोशनल कुछ भी देखा नही जाता बोला मैं उसको , भाई , जल्दी बता क्या करना है , वरना तेरे इस रेहाना के लियें लाइन लग जाएगीं !

हाशह...श.. मान गया आखिर में ! दों लोग तो ठिकाने लग चुके थे , एक जर्नलिस्ट और एक अक्ष बची ये ... तो मैंने पहले ही कहा था ,के मुझें तितलियाँ पसंद है ! रख लिया इस तितली को इसी तरह धागे से बांध कर आयनों के कमरे में ! और उसी हवालदार के हाथों अक्ष को

खबर भेज दी के तेरी रेहाना टपक गयीं ! तुजे इसे देख कर तो अंदाजा लग ही गया होगा के हमने इसके साथ क्या क्या किया है ! तो ... ये थी वजह अक्ष के फ़ासी पर जाने की , जानना चाहती थी न तुम !"

साक्षी , देवा की सारी बात सुन कर मायूस हो गयीं थी , उसके आँखों में आंसू भी आने लगे और देवा के लियें गुस्सा भी था !

"मेरे अक्ष को बेवजह फ़ासी पर चढ़ा दिया तुम्हने , उसकी गलती ना होते हुयें भी ! पहले तो उसकी जिंदगी बर्बाद की और बादमें ख़त्म ही कर दी ! तुज जैसे कुत्ते को तो नाखून से नोच नोच कर फाड़ देना चाहियें !" साक्षी वही गुस्से भरी बातों से देवा को कहने लगी !

"इतनी इस शहर में तो किसी की हिम्मत नही है और रहा तेरा सवाल तो तू भी एक तितली बन चुकी है इस रेहाना की तरह धागे से बंधी हुयीं !" देवा , साक्षी से बात ही कर रहा थे के तभी देवा के खुर्ची के पीछें खड़े शिवा का मोबाइल बजने लगा !

"बोल बिरला ??" शिवा मोबाइल को कानों पर लगते हुयें कहने लगा ! सामने से थोड़ी देर बोलने के बाद शिवा ने अपना मोबाइल जेब में रखा और देवा से कहने लगा , "भाई ..... माधव मिल गया , बिरला लेकर आ रहा है उसे !"

"चलो ... इस कहानी को भी ख़त्म करने का वक़्त आ गया !" देवा !

"अरे...हा... साक्षी ... तुम्हें एक बात बताना भूल गया , तुम्हें पता है तितलियाँ कितने महीनों तक जीती है ? १२ महीने ... सिर्फ १२ महीने उस के बाद मर जाती है ! और इस अक्ष की तितली को तो २ साल हो गयें यहाँ रह कर, तो इसके भी जाने का वक़्त हो गया !"

"तो...इस रेहाना को बचाने खातिर उस रेहाना के क़त्ल के इल्जाम में अक्ष फ़ासी पर गया , अब इस साक्षी को बचाने खातिर इस रेहाना के क़त्ल के इल्जाम में माधव फ़ासी पर जाएगा ! कैसा लगा शिवा प्लान !" देवा !

"जबरदस्त ..है.. भाई ...! लेकिनं भाई.. अगर माधव नही माना तो ?" शिवा !

"तो ... सोच लेंगे फिर से कुछ ! लेकिन ..हा... शिवा . ... पहले पता करले के माधव की इस अक्ष की तरह कोई दोस्त वोस्त तो नही है न बचपन की......!"

.....